।=) से ॥) तक एक गाड़ी का होता है पर मेले के दिनों में किराया बहुत बढ़ जाता है ॥

त्रिल्लीवकम ।

मद्रास रेलवे पर है स्टेशन के पास दमोदर पेरुमल और अगथेश्वर दो मन्दिर हैं जिनके दर्शन को बहुत यात्री आते हैं॥

त्रिल्लीवकम मद्रास से ६ मील है तीसरे दरजे का किराया =) लगता है ॥

यहां सवारी कोई नहीं क्योंकि गांव स्टेशन के पास है गांव में दस चोलत्रियां और चतरम याने धर्मशालायें हैं ॥

पीसी हुई हड्डियां यहां से बाहर जाती हैं और साबत हड्डियां देसी कपड़ा और लकड़ी बाहर से आती हैं ॥

विनूकोंडा ।

मद्रास अहाते के किस्टना जिले में पहाड़ा और नगर है और यहां पर एक पहाड़ी किला है जिस की बाबत एक अजीब बात मशहूर है । कहते हैं कि रामचन्द्रजी को पहले पहल सीताजी के छलेजाने की इसी जगह खबर मिली थी पहाड़ी समुद्र से ६०० फीट ऊंची है और इसके गिर्द तेहरी दीवारें बनी हैं जिस के अन्दर पानी के हौज और अनाज के खाते थे ॥

विंकरावंदी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से ६३ मील है और तीसरे दरजे का किराया १=) लगता है॥

स्टेशन से दो मील दक्खिन पूर्व की तरफ एक शिवजी का पुराना मन्दिर है जो नेथरुथराकार के नाम पर है इस मन्दिर में जनवरी और फरवरी के महीनों में तेहवार होते हैं। स्टेशन से ३ मील रथा पुरम में आठवें दिन मेला होता है जिस में पशु, अनाज और चमड़ा बिकने के लिये बहुत आता है॥

विकरावन्दी में दो चतरम या धर्मशालायें और बंगला है जो स्टेशन से आधे मील के फासले पर हैं बैलगाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिलती हैं॥

यहां से धान तिल और नील बाहर जाता है और अनाज लाल मिरचें और लकड़ी बाहर से आती हैं॥

विजागापटम।

अहाता मद्रास में नगर और बन्दर है इस की आबादी ३५ हजार है पास एक पहाड़ी है जो खाड़ी में कुछ दूर तक चली गई है। इस का नाम डालफिन नोज है और इस के ऊपर से बड़ा अच्छा नजारा दिखाई देता है। एक और पहाड़ी है जिस को बीच में से काटा हुआ है इस में से पहले ईस्ट कोट रेलवे गुजरा करती थी, इस पहाड़ी के ऊपर एक गिरजा, एक हिन्दुओं का मन्दिर और एक मुसलमानों की मसजिद है सब धर्मों के लोग और उन के पुजास्थान इकट्ठे हों यह बात और किसी जगह नहीं पाई जाती। विजागापटम इतिहासी नगर है पहले यह डच्च लोगों की बस्ती थी और फिर करुमण्डल पर अंग्रेजों का गढ़ बना और किसी दिन यह बड़ा बन्दर बन जाये गा॥

विजागापटम मद्रास रेलवे का स्टेशन है इसका फासला रायापुरम मद्रास से ४८७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ६।≈) लगता है॥

विज़ागापटम में दो चतरम हैं एक तो स्टेशन के पास है और दूसरी पौन मील के फासले पर है। अंग्रेज लोगों के ठहरने के लिये वालटेयर के बंगले क्लब और फराम जी का होटल है॥

बैलगाड़ियां स्टेशन पर और नगर में मिलती हैं और फरामजी और कम्पनी को लिखने से घोड़ा गाड़ियां भी किराये पर मिल सक्ती हैं यहां हाथी दांत का काम बहुत अच्छा होता है॥

वैनकाटागिरी।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मदरास बीच जंकशन से ३०१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३।=)॥ लगता है॥

वेनकाटागिरी एक बड़ी ज़िमींदारी का बड़ा नगर है और इस में एक महल है जिस में राजा रहता है। इस नगर में एक बंगला भी है जिस में अंग्रेज़ लोग राजा की इज़ाजत से ठहर सक्ते हैं जून या जूलाई के महीने में यहां एक छोटे से मन्दिर में ईश्वर ब्रह्म ऊतशावम तेहवार होता है लूथरन ईसाईयों का इस जगह गिरजा है, और अच्छा रेस का कपड़ा बनता है वेनकाटागिरी और यल्लाकारू के बीच में जंगल है जिस में चीते, भालू और कभी २ शेर का शिकार मिलता है॥

यहां देशियों के लिये दो बहुत सुन्दर आश्रम हैं एक स्टेशन के बिलकुल पास है और दूसरा नगर में स्टेशन से २ मील के फासले पर है। अंग्रेजों के लिये भी यहां दो बंगाले हैं यह दोनो स्टेशन से तीन मील के करीब हैं॥

वेस्टाहल।

मदरास रेलवे की अर्ज़ीकल शाख पर स्टेशन है इस का

फासला मद्रास से ४१७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५।≡) और सवारी गाड़ी में ४।≈) लगता है॥

इस जगह दशहरे के मौक़े पर स्टेशन से उत्तर की तरफ वरका मन्दिर पर हर साल मेला होता है। दीपमाला के मौक़े पर नवम्बर महीने में एक और बड़ा भारी मेला होता है जिस में ५ या ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं यह दोनों मेले एक एक दिन रहते है॥

यहां कोई सराए या धर्मशाला नहीं लोग शाम को अपने २ घरों को लौट जाते हैं॥

शाहपुर।

सूबा पंजाब के ज़िला गुरदासपुर और तहसील पठानकोट में एक गांव है। यहां सितम्बर के महीने में एक बड़ा भारी मेला होता है जिस को सैर कहते हैं इस में ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

पठानकोट नार्थ वैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख पर स्टेशन है इसका फासला अमृतसर से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥।)॥ लगता है॥

पठानकोट में एक सराय है और यक्के किराये पर मिलते हैं॥

शाहदरा-देहली।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला मेरठ और तहसील गाजीआबाद में नगर और मीयूनिसिपैलटी है। यह नगर जमना की पूर्वी नहर के बाएं किनारे पर मेरठ शहर से ३१ मील के फासले पर बाके है और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। इस

को शाहजहान ने अपनी फौज़ों की रसद के लिये मण्डी के तौर पर बसाया था। इस को सूर्यमल भरतपुर के जाट ने और पानीपत की लड़ाई से पहले अहमदशाह दुर्रानी ने लूटा। मिठाई, जूतियां और चमड़े का असबाब बनकर बाहर जाता है और इस जगह खांचियां भी बहुत है॥

जूलाई महीने में तीज का मेला बड़ा भारी होता है जिस में २० हज़ार के करीब लोग आते हैं॥

शाहदरा दिल्ली से ४ मील है तीसरे दरजे का किराया ‿)॥। लगता है॥

इस जगह थाना डाकखाना और एक सुन्दर सराय है॥

शाहदरा—लाहौर।

सूबा पंजाब के जिला लाहौर में लाहौर के सामने रावी दरया के पश्चिमी किनारे पर वाके है। इस में जहांगीर बादशाह और उस की मलका नूरजहां के मकबरे एक बाग में हैं। और देखनेके लायक हैं। लाहौर के लोग यहां अकसर जातेहैं। सिक्खोंने यहां से संगमरमर लेजाकर अमृतसर दरबार साहिब में लगाया था शाहदरा लाहौर से नार्थवेस्टर्न रेलवे में दूसरा स्टेशन है उस का फासला लाहौर से ५ मील है तीसरे दरजे का किराया ‿) लगता है। लाहौर से शाहदरे को तांगे और टमटमें भी मिलती हैं॥

इस गांव में जून के महीने में कदम थौंकल का मेला होता है जिस में ६ हजार के करीब लोग आते हैं॥

शाहापुर।

अहाता बम्बई के थाना जिले में शाहापुर सबडिवीज़न का बड़ा

नगर है बम्बई से यह नगर ५४ मील उत्तर पूर्व की तरफ है और जी० आई० पी रेलवे के असनगांव स्टेशन से इसका फासला पौनेदो मील है। नगर भाटसा दरिया की शाख भादंजी नदी के किनारे पर और माहुली किले से ५ मील के फासले पर बसा हुआ है। फर्वरी के महीने में महाशिवरात्री के मौके पर मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं। इस से बड़ा एक और मेला १५ दिन बाद होली के पूरे चांद के मौके पर होता है॥

शाहापुर जानेवाले मुसाफिरों को असनगांव स्टेशनपर उतरना चाहिये असनगांव बम्बई से ५४ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥।०) और सवारी गाड़ी में ॥-) लगता है॥

शाहापुर में एक डाक बंगला और दो धर्मशालाएं हैं॥

असनगांव में जो एक छोटा सा गांव है कोई टिकने की जगह नहीं। असनगांव में तांगे शाहापुर जाने के लिये किराये पर मिलते हैं पूरे तांगे का किराया ।) लगता है॥

शाहापुर में चावलों की चार चक्कियां हैं। यहां से चावल,लकड़ी और कोयले बाहर जाते हैं और अनाज बाहर से आता है॥

शिंगनापुर।

अहाता बम्बई के सतारा जिला और मान सब डिवीजन में एक नगर है जो सतारा से ६ मील के फासले पर वाके है। यह बड़े तीर्थ की जगह है। पहाड़ीकी चोटी पर महादेव का मन्दिर है जिस के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है। मार्च अप्रैल के महीने में यहां बाड़भारी मेला होता है जिस में ५० हजार के करीब लोग आते हैं मेले के दिनों में सफाई का बहुत इन्तजाम किया जाता है॥

सदर्न मर्हटा रेलवे पर सतारा रोड स्टेशन पुना से ७७॥ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १)। और स्वारी गाड़ी में ॥।-) लगता है॥

शिमला।

गवर्नमेंट हिंदुस्तान का गरमी के मौसम का सदरमुकाम है समुद्र से इस की ऊंचाई ७ हजार से ८ हजार फीट है। शिमला जाकू पहाड़से वैसरीगलबाज याने हिंदुस्तान के लाटसाहब के महल और छोटे शिमले से वालूगंज तक फैला हुआ है। शिमले में सबसे पहिला मकान लफटिनेन्ट रास साहब पुलिटिकल एजंट ने १८१६ ई० में बनाया था होते होते यह जगह ऐसी दिल पसंद होती गई कि लार्ड एमहर्स्ट हिंदुस्तान के पहले गवरनर जनरल ने थोड़े से स्टाफ के साथ आकर १८२७ की गरमी इसी जगह गुजारी। शिमले की आब हवा बहुत अच्छी है और इर्द गिर्द का नजारा बड़ा सुहावना है इस जगह बहुत से उमदा होटल हैं जिन में से सिसल होटल चौड़े मैदान में डाकखाने के सामने, लोरी का होटल मेटरोपोल होटल और यूनाईटड सरविस क्लब ठंढी सड़क पर, इलजियम होटल लांगवुड होटल बड़े डाकखाने से एक मील उत्तर की तरफ एक पहाड़ी पर और ग्रांड या पलेटी का होटल तार घर की ऊपर की तरफ सड़क पर वाके हैं देशी लोगों के लिये गाड़ी सड़क पर पुराने पक्के खाने के करीब एक अच्छी सराय है जिस में एक कमरे का ॥) एक दिन का किराया लगता है॥

कालका से जो पहाड़ के नीचे शिमले से ७० मील के फासले पर वाके है कालका शिमला पहाड़ी रेल शिमले तक जाती है तीसरे दरजे का किराया ३।)॥ लगता है। यह लाइन बड़ी अजीब बनी हुई है और देखने के लायक है॥

शिमला कलकत्ते से ११३५ मील है और तीसरे दरजे का किराया १४-) और बम्बई से जी० आई० पी०रेलवे में फासला १२२६ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १६।-) लगता है।

शिमले में डाकखाना, तारघर और सरकारी दफतर खूबसूरत बने हुये हैं॥

शिमोगा।

शिमोगा जिले का सदरमुकाम और सदर्नमर्हट्टा रेलवेका स्टेशन है। यहां शैशनजज और मुनसिफों की कचहरियां, डिप्टी कमिशनर और असिस्टेंट कमिशनरों के दफतर, डाकखाना, तार घर और हस्पताल हैं। जेरेस्पा की मशहूर पानी की चादरें यहां से ६४ मील के करीब हैं। यह चादरें सारे जगत की चादरों से ऊंची हैं और सुन्दरताई में सब से बढकर हैं। एक चादर जिसका नाम राजा है ८३० फीट की ऊंचाई से गिरती है इसके सिवाय तीन और हैं जिन के नाम रोरर रॉकेट और डेम बलैंक हैं। यह पश्चिमी घाटके किनारे पर हैं,इर्द गिर्द का नजारा बडा सुहावना है। इन के देखने के लिये सब से अच्छा सरदी का मौसम है। मैसूर रियासत की तरफ से हर रोज शिमोगा से सागर तक जो शिमोगा से ४५ मील है एक डाक का यक्का ८ बजे सवेरे चलता है और सागर ५॥ बजे पहुंचता है एकसवारी का किराया एक तरफ का ३) रुपया लगता है। जुदा यक्का भी ८) रु० किराये पर मिल सक्ता है। डाक के यक्के में जगह के लिये शिमोगा के पोष्टमास्टर को कम से कम एक दिन पहिले खबर देनी चाहिये मुसाफिरों को अपना असबाब पहले भेज देना चाहिये क्योंकि डाकके यक्के में एक रुपया एक गठडी का किराया लगता है। सागरसे चादरों तक जाने के लिये सवारी के वास्ते सागर के अम्मिलदार को दरखास्त करनी चाहिये॥

सागर में एक बंगला है और चादरों के पास दो बंगले हैं इन में बर्तन लैम्प और सब असबाब है पर मुसाफ़िरोंको खाने का बन्दोबस्त आप करना चाहिये ॥

शिमोगा पूना से ४३२ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥=)॥ और सवारी गाड़ी में ४॥)॥ लगता है ॥

शियाली ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है। इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से १६४ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २७) और सवारी गाड़ी में १॥।=) लगता है ॥

नगर में ४ देशियों के होटल कई मन्दिर और दफ़तर हैं। चित्राई तेहवार यहां हर साल मई के महीने में होता है । इस कोरर की चटाइयां बहुत अच्छी बनती हैं ॥

स्टेशन से १२ मील के फासले पर नेदात्रसाल गांव में नमक का कारखाना है। शियाली में लूथर्न ईसाइयों का मिशन है और स्टेसन से एक मील के फासले पर एक बंगला है ॥

शेरगढ़ ।

सूबा पंजाब के मिण्टगुमरी जिले और दीपाल पुर तहसील म गांव है इस जगह हजरत दाऊद बंदगी की खानगाह है जिस पर हर साल मार्च के महीन में आठ दिन तक बड़ा भारी मेला होता है। इस में ६ हजार के करीब हिन्दू और मुसलमान आते हैं कहते हैं कि इस महात्मा ने बहुत से आश्चर्य काम किये थे ॥

शेरगढ़ में कोई सराय नहीं लोग पुराने घरों में ठहरते हैं ॥

को ठीक ठाक करते हैं मेला हर साल जून या जूलाई के महीने में होता है ॥

से रिंगापटम ।

कावेरी दरया में टापू है पहिले रियासत मैसूर की राजधानी थी यह बड़ा इतिहासी नगर है यहां टीपू सुलतान और अंगरेजों में बहुत लड़ाइयां हुईं थीं और इस जगह १७६२ में लार्ड कार्न वालिस ने टीपू से सुलाहनामा लिखवाया था और १७६६ में जनरल हैरीस ने टीपू को शिकस्त दी थी और इसी लाड़ई में टीपू मारा गया था। सेरिंगापटम में टूटी हुई .फसील, डंजन डी हेवलैंड अर्च रंगा का मन्दिर जामामसजिद, वैलजली पुल और किला देखने के लायक हैं किले के पूर्व की तरफ दरया दौलतबाग है जिस में टीपू सुलतान का गरमी में रहनेका महल है इसमहलमें वादमें डियूफआफ वैलिङ्गटन रहा करते थे इस की दीवारों पर भांति भांति की सुन्दर तसवीर और वेल बूटे बने हुए हैं और आगे पूर्व की तरफ गजाम के पास लाल बाग है जिस में टीपू ने अपने बाप हैदर का मकबरा बनवाया था इसी मकबरे में टीपू भी दफन है । इस मकबरे के दरवाजों पर हाथी दांत का बहुत खूबसूरत काम किया हुआ है यह दरवाजे लार्ड डिलहाजी ने दिये थे । स्टेशन से हैदरअली का मकबरा तीन मील है स्टेशनमास्टर को दरख्वास्त करने पर गाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिल सक्ती हैं । स्टेशन से १॥ मील के फासले पर बंगला है यहां खाने का बन्दोबस्त आप करना पड़ता है ॥

सेरिङ्गापटम सदर्न मरहट्टा रेलवे की मैसूर बंगलोर शाख पर मैसूर से ६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ≈) और सवारी गाड़ी में ≈)॥ लगता है ॥

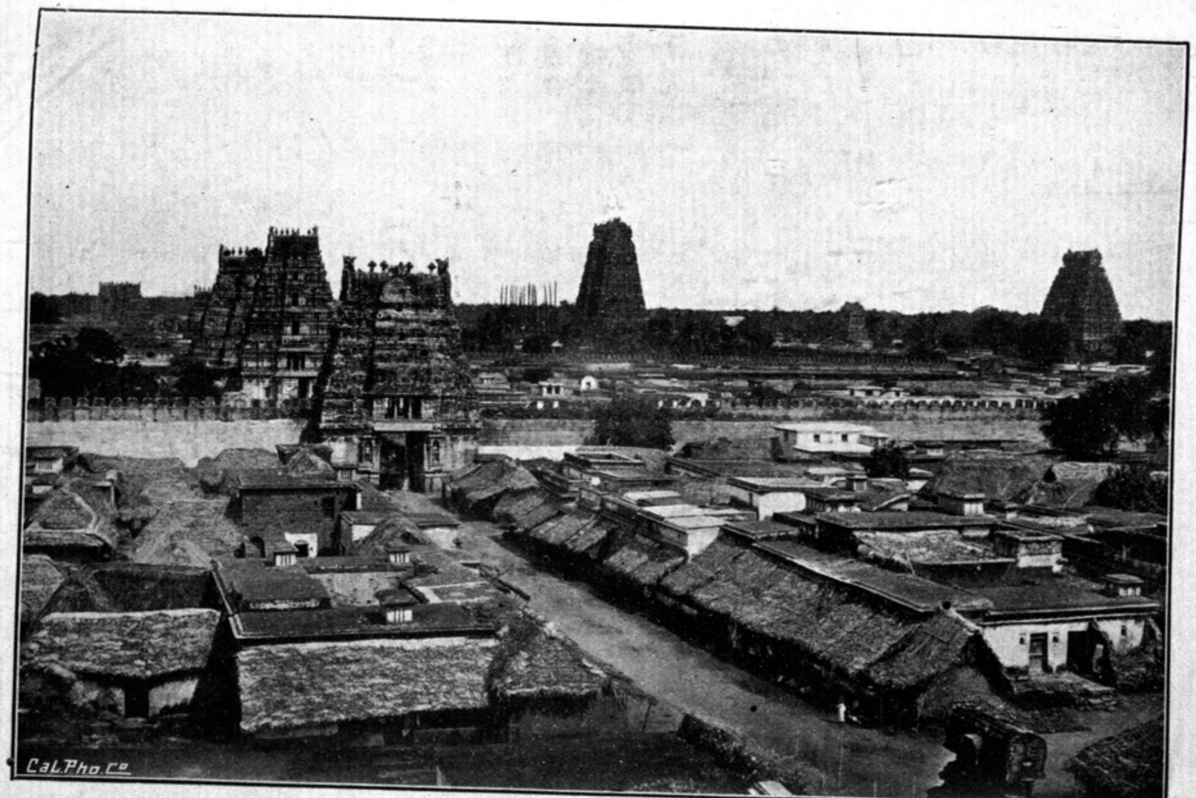
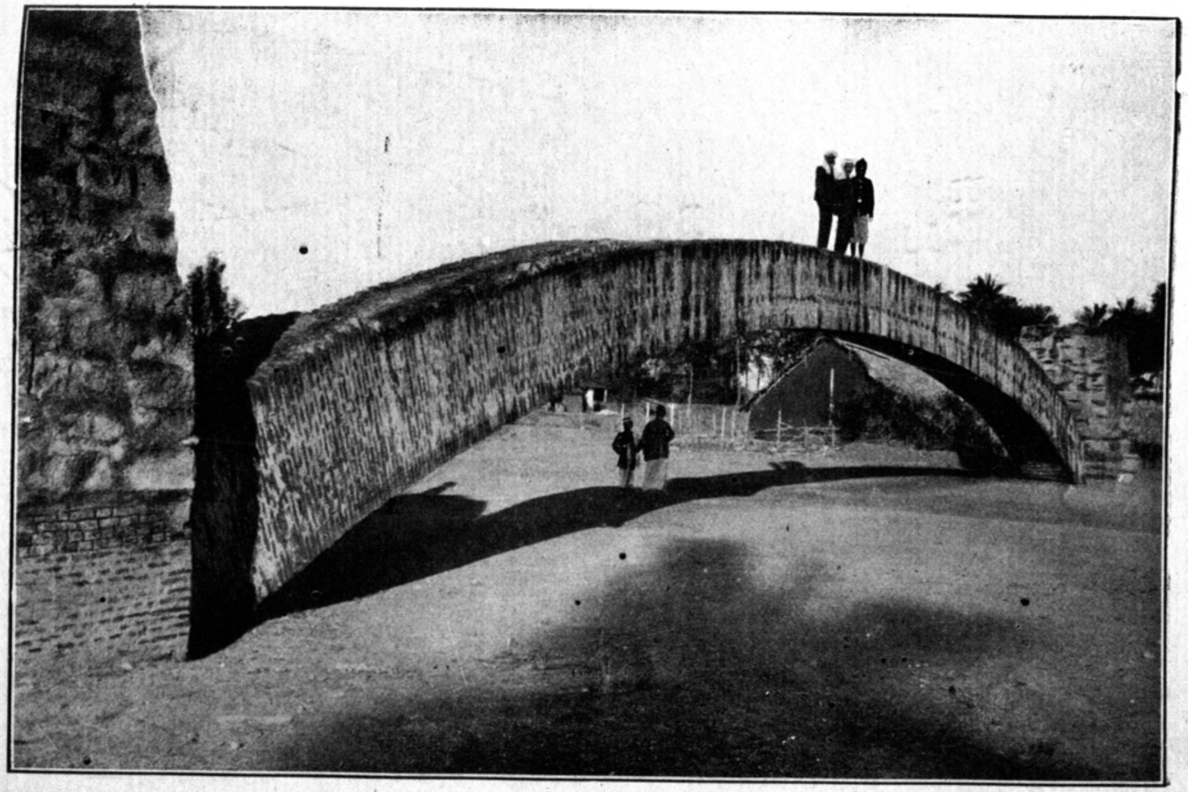


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सिरंघम पगीडे त्रिचनापली ।



आज़मायशी पुल—सिरंगापटम।

सैवरी नारायण ।

सूबाजात मुतवस्त के बिलासपुर ज़िले में बिलासपुर नगर से ४६ मील पूर्व की तरफ महानदी दरिया के किनारे पर एक नगर है। इस जगह नारायण का मन्दिर है जो मालूम होता है कि ८४१ में बना था। यहां फरवरी के महीने में हर साल बड़ा भारी मेला होता है॥

सेवरी नारायण के लिये बंगाल नागपुर रेलवे का नौलास स्टेशन पास है पर यहां से कोई सड़क नहीं जाता इस वास्ते यात्रियों को बिलासपुर स्टेशन पर उतरना चाहिये। बिलासपुर में सवारी के लिये बैलगाड़ियां किराए पर मिलती हैं॥

बिलासपुर कलकत्ते से ४४५ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥-) ॥ लगता है॥

सौनदत्ती

बम्बई अहाते के बेलगाम ज़िला पारसगढ़ सब डिवीज़न से सब से बड़ा नगर है। यह बेलगाम नगर से ४१ मील और सदर्न मरहट्टा रेलवे के धारवार स्टेशन से २० मील के क़रीब है सोनदत्ती से चार मील के फासले पर यल्लम्मा देवी का मन्दिर है यल्लम्मा एक ऋषि की स्त्री थी और उस के तीन पुत्र थे एक दिन यल्लम्मा की अन्य आज्ञाकारी के सबब उस का पति ऐसा गुस्से हुआ कि उसने लड़कों को हुकम दिया कि उस को मारडालो। छोटे लड़के ने यह कह कर कि पिता का हुकम मानना ज़रूरी है अपनी माता को मार डाला पीछे लड़का अपने पिता से बोला कि मैंने आप का हुकम माना और अपनी माता को मारने का पाप किया अब आप माता को जीता कर दें। जब लड़का पीछे पड़ा तो आखिर ऋषि ने मान

लिया और यल्लम्मा को जीता कर दिया पर वह उस से राज़ी नहीं था यल्लम्मा ने उसको खुश करने के लिये तीन वर्ष तक बिना खाये पिये अपने पति की सेवा की और आखिर उसको राज़ी कर लिया हरसाल नवम्बर दिसम्बर और जनवरी के महीनों में ६० हजार के करीब लोग यल्लम्मा के मन्दिर पर यात्रा को आते हैं ऋषि और इसके छोटे लड़के के मान्दिर भी हैं पर वह ऐसे पवित्र नहीं समझे जाते ॥

धारवार स्टेशन पर बैलगाड़ियां और घोड़े गाड़ियां मिलती हैं ॥

सौनदत्ती में एक धर्म्मशाला और मन्दिर के ऊपर की तरफ एक बंगला है ॥

यहां से बहुत रुई गोकल कबों को जाती है ॥

धारवार पूना से ३२१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४≡) और सबारी गाड़ी में ३≡)॥ लगता है ॥

सत्तीरा कुर्दी ।

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे की मंदापम शाख पर है उसका फासला मदरास बीच से ४०५ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४।-) और सवारी गाड़ी में ४॥) लगता है ॥

शिवजी का एक पुराना मन्दिर जिस को ऊथराकोसामंगई कहते हैं स्टेशन से ६ मील दक्षिण पूर्व की तरफ है यहां फर्वरी जूलाई और अगस्त के महीनों में ब्रह्मऊतशावम याने रथ यात्रा के मेले होते हैं। स्टेशन से २॥ फर्लाङ्ग के फासले पर एक चौलत्री याने आश्रम है। यहां धान पैदा होते हैं और हर सोमवार को एक मेला लगता है ॥

सारनाथ।

बुद्ध लोग इस जगह को बुद्ध गया से दूसरे दरजे पवित्र समझते हैं। यह बनारस से ३॥ मील उत्तर की तरफ है साक्य मुनि पहिले इसी जगह बुद्ध धर्म का उपदेश किया करता था और बाजे खण्डर उसी के वक्त के मालूम होते हैं। सब से अजीब एक गुम्मद हैं जो धरती से ११० फीट ऊंचा और ९३ फीट चौड़ा है इसका नाम धमेक है। यहां दो और स्टूपे और बहुत से खंडर हैं धमेक उसी जगह पर बना हुआ है जहां राजा अशोक ने एक बुर्ज बनाया था॥

बनारस ईस्टइण्डियन और अवधरुहेलखण्ड रेलवे में कलकत्ते से ४२९ मील और लखनऊ से १९९ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।≈) और २)॥ लगता है॥

सारसपुर।

आसाम के दक्षिण में पहाड़ी पर है। इस पर्ब्बत के सिरे पर बदर पुर नगर है जिस में शिव जी का पुराना मन्दिर है शिव जी की यहांपर सिद्धेश्वर के नाम से पूंजा होती है। मार्च के महीने में यहां मेला होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं॥

बदरपुर जंकशन आसाम बंगाल रेलवे पर है इस का फासला चिटागांग से २९२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥≈) लगता है॥

संकारौंडरग।

यह मदरास रेलवे पर स्टेशन है। यहां से ५ मील के क़रीब, त्रिचंगोद है जिस में हिन्दुओं का एक बड़ा मशहूर मन्दिर है॥

इस मन्दिर के दर्शन को हजारों यात्री आते हैं यहां मई महीने के करीब हर साल एक मेला होता है ॥

सङ्कारीडरग मद्रास से २३१ मील है तोसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी मे ३) और सवारी गाड़ी में २।≈) लगता है ॥

सांची।

भोपाल रियासत में भीलसा से ५ मील दक्षिण की तरफ है जिस पहाड़ी पर सांची का मशहूर टोप है वह गांव से १५ मिनट का रास्ता है। प्राचीन वस्तु विद्या वालों के लिये यहटोप देखने के लायक है। गांव के इर्द गिर्द मीलोंतक बुद्ध लोगों के बहुत से पुराने खण्डर हैं पर सांची में बुद्ध लोगों के पुराने मकान और भी जियादा हैं और अभी तक अच्छे हाल में हैं यहां बुद्ध लोगों की संगतराशी की मूर्त्तें हैं जिन से बुद्ध लोगों की रसमें और पूजा वगैरा का ढंग जैसे अशोक के राज्य में होता था मालूम होता है। सांची की बाबत चीनी यात्री फाहियन ने भी लिखा है वह इसका नाम शाची लिखता है और कहता है कि उन दिनों में यह बड़ी भारी रियासत थी ॥

मालूम होता है कि बेसनगर के पुराने नगर और सांची और इर्द गिर्द के अस्थलों से मालवे के इस हिस्से में बहुत धन आता होगा। बेसु नगर उन दिनों में दक्षिण की तरफ बेतवा और बेस दरियाओं के संगम से उदया गिरि पहाड़ी तक और पूर्व की तरफ भीलसा की लोहंगी चटान तक फैला हुआ था। सांची से सधारा तक घाटियों में बंधों के निशान हैं जिन से मालूम होता है कि बुद्ध लोग पक्के किसान थे ॥

सांची स्टेशन पर तीसरे दरजे के मुसाफिरों के लिये एक मुसाफिर खाना बना हुआ है और स्टेशन से थोड़े फासले पर भोपाल

को बेगम साहिब का बनाया हुआ बंगला है। सांची स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों को उतारने या चढ़ाने के लिये डाकगाड़ी खड़ी कर दी जाती है अगर सांची और इटारसी या भोपाल के स्टेशन मास्टरों को मुसाफिर खबर कर देवें॥

सांची जी० आई० पी० की बम्बई आगरा लाइन पर स्टेशन है, इस का फासला बम्बई से ५४६ मील और दिल्ली से ४०६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६) और ५।=) लगता है॥

साखीगोपाल।

पुरी की जिले कचहरी से १० मील रेल के रस्ते और २१ मील पक्की सड़क के रस्ते जगन्नाथ की सड़क पर है। इस में श्रीगोपाल जी विष्णु का मन्दिर है जिस के यात्री लोग पुरी में जगन्नाथसे आते हुए दर्शन करते हैं। यहां नारियल का बड़ा ब्योपार होता है॥

साखी गोपाल बङ्गाल नागपुर रेलवे पर है इस का फासला कलकत्ते से ३०० मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥=) और मद्रास मेल में ४॥=) हैं॥

साखी गोपाल में बहुत धर्मशाला हैं और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

सकरा या पटना या सकरेपटना।

अहाता मदरास की रियासत मैसूर के जिला कडूर में गांव है जो चिकमंगलूर नगर से १५ मील उत्तर पूर्व की तरफ है। यह गांव एक पुराने नगर की जगह पर बसा हुआ है जिसकी बाबत यहां के लोग कहते हैं कि यह राजा रुकमंगदाकी जिसका जिकर महाभारत में है राजधानी थी। यहां हानबिल्ला चौकीदार की समाध देखने के

लायक है हानिबिल्ला का अध्ययन कियर ताल जो गांव के पास है कायम रखने के लिये बलिदान किया गया था। यहां हर साल रंगा नाथ का रथ यात्रा का मेला होता है जिस में २००० छत्तेर देवता को बलि दिये जाते हैं। यहां हर शुक्र को भी एक बड़ा मेला होता है॥

सरस्वती।

पंजाब का पवित्र दरिया है रियासत सिरमौर से निकलता है और ज़िला अम्बाला में जब बदरी मुकाम पर मैदान में पहुंचता है यह मुकाम सब हिन्दुओं के नजदीक बड़ा पवित्र है॥

सरस्वती नाम से जिस के माने हैं तालाबों का दरिया इस के पहले हिस्से की हालत बखूबी मालूम होती है यहां पर शुरू साल में दरिया खुश्क होकर बहुत से अलग अलग तालाब रह जाते हैं जिन के मुतल्लिक एक एक कहावत और एक एक मन्दिर हैं जिनके दर्शन को हजारों यात्री लोग हर साल आते हैं कहते हैं कि सरस्वती महादेव जी की लड़की थी एक दिन उसका बाप नशे की हालत में उस के सत्य को तोड़ने के ख़ियाल से उस के पास आया तो वह भागी और जब अपने बाप को पास आते हुए देखती तो धरती में गोता मार जाती उसके पीछे पीछे दरिया बनता गया और जहां सरस्वती ने धरती में गोता मारा था वहां गायब हो जाता है। पक्के हिन्दुओं का ख़ियाल है कि सरस्वती धरती के नीचे नीचे इलाहाबाद के पास गंगा जी और जमुना जी से जा मिलती है। जहां अमर बड़ के दरख़्त के मन्दिर की गुफा की दीवारें पर नमी इस बात को जाहर करती है कि दरिया वहां मौजूद है बाजबाज आर्यों की पहली बस्तियां इस दरिया के किनारे पर कायम हुई थीं और आस पास का मुल्क बेदों के जमाने से पवित्र समझा जाता है॥

सलसत्ते ।

बम्बई जजीरे के उत्तर की तरफ एक जजीरा है, यहां दोनो एक पुल और ऊंची सड़क से मिला दिये गये हैं सलसत्ते चैतिया खोह के सबब मशहूर है जो कनेरी में है यह खोह पांचवी सदी का है लेकिन बिहारे उस से भी पहले के हैं चौथी सदी में सलसत्ते बुद्ध के दांत के सबब मशहूर था ॥

बम्बई कलकत्ते से ३४६ मील है और तीसरे दरजे का किराया १३=) लगता है ॥

सातापुर ।

जी० आई० पी० रेलवे पर चितराकोट पवित्र पर्बत के पास पैसूनी नदी के बाएं किनारे पर है । बड़ावाजार नदी के किनारे पर है और वहां बहुत से खूबसूरत और पुराने मन्दिर हैं जिनको सारे हिन्दुस्तान देश के हिन्दू पवित्र मानते हैं और आदर करते हैं ॥

चित्राकोट झांसी से १५७ मील है तीसरे दरजे का किराया २=) लगता है ॥

सिंगापेरुमल कोइल ।

विष्णु के मन्दिर के सबब से जो एक छोटी सी पहाड़ी पर है इस जगह का नाम सिंगापेरुमल होगया है । इस गांव में हरसाल मई के महीने में एक तेहवार होता है । स्टेशन से एक फरलांग के फासले पर एक चोलत्री याने आश्रम है, जिस को सम्वत १६०० में मदरास के सौदागरों मोज़ज़ और कम्पनी के हिस्सेदार एम० आर० सी० एथोराजूलू चेट्टी गरु ने मन्दिर के दर्शन को आने वाले यात्रियों के विश्राम के लिये बनाया था ॥

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे की मदरास टूटी कर्णब्रांच पर वाके है मद्रास बीच जंकशन से इस का फासला ३२ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।≈) और सवारी गाड़ी में ।≈)॥ लगता है ॥

साहडोल ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर है सोहागपुर नगर स्टेशन से थोड़ीदूर है। यह नगर ब्योपार की जगह है। और बहुत पुराना है इस का पुराना नाम विर्तपुर है और इस में एक ताल है जिस को बानगंगा कहते हैं और एक बड़े राक्षस कचिका का मन्दिर है जिस को पांडव और कौरव की लड़ाई में भीम ने माराथा कहते हैं पांडव अपने वनबास में एकवर्ष इस जगह राजा विदूर के पास छुपे रहे और इसी जगह पांडव और कौरव में पहिली लड़ाई हुईथी और दकोरा तेहवार के दिन उस रुख को जिस के पीछे पाण्डव ने अपने हीथयार छुपाए थे अबतक पूजा होती है। चांद या सूर्य ग्रहण के मौके पर यहां का ताल बहुतहीं पवित्र समझा जाता है यहां पत्थर का कोएला भी निकलता है ॥

साहडोल कलकत्ते से ५६५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६ॽ)। लगता है ॥

सागर ।

अहाता बंगाल में हुगली दरियाव के दाहने पर एक टापू है इस जगह जनवरी के महीने में बड़ा भारी मेला होता है जिस में बहुत यात्री बंगाल के सब हिस्सों से पवित्र दरिया में स्नान करने आते हैं और उस में जियादा औरतें होती हैं इस मौके पर ब्योपार

भी बहुत होता है। १८६४ के भौंचाल से इस टापू में बहुत नुकसान हुआ था॥

कलकत्ते से सागर तक अगनबोट में तीसरे दरजे का किराया ३।) लगता है॥

भागीरथी के नीचे सागर का बाकी हाल देखो॥

सादूल्लापुर।

अहाता बंगाल के ज़िला मालदा में गांव है। भागीरथी का सब से पवित्र घाट इस जगह पर है और हिन्दू लोग मुरदे दूर दूर से यहां लाते हैं क्योंकि यह बहुत पुराना मरघट और स्नान करने की जगह है। मार्च के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है॥

श्रीरंगम।

कावेरी दरया के जज़ीरे में त्रिचनापली से दो मील उत्तर की तर्फ एक कसबा है जज़ीरे में पहुंचने के लिये एक लम्बा पुल बना हुआ है। यह कसबा विष्णु के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है यह मन्दिर हिन्दुस्तान में सब से बड़ा है उस की इस वक्त की ऊंचाई २०० फीट है॥

दर्मियाना अहाते के साथ का अहाता निहायत खूबसूरत है इस में पील पाओं का दालान है जिस की लम्बाई ४५० फीट और चौड़ाई १३० फीट है सतून लाल रंग के एक एक पत्थर के बने हुए हैं और बड़ी मेहनत से मुनक़्क़श किये गये हैं दूर से १४ या १५ बड़े बुर्ज अच्छा नज़ारा देते हैं यहां पर चन्द खूबसूरत बाग़ और तालाब भी हैं सब मकान १७ और १८ सदी के हैं ख़्याल किया जाता है कि सब मकान वग़ैरह बैकुण्ठ यानी विष्णु के स्वर्ग की नकल हैं॥

श्रीरंगम रामनया के रहने की जगह होने के सबब मशहूर है जो वेसिशता देवता फिलासफी का बनाने वाला था कहते हैं वह १२० साल की उमर तक जीता रहा मन्दिर के एक आंगन में रामानया का स्थान है ॥

श्रीरंगम में देशी और अंग्रेज़ लोगों के लिये कोई आश्रम नहीं यात्री लोगों को किराये पर मकान मिल सकते हैं ॥

श्रीबिल्ली पुतूर ।

मद्रास अहाते के तिनिवेली ज़िले में श्रीबिल्लीपुतर तालुक का सदर मुकाम है। इस में २० हज़ार की आबादी है और हर साल रथ यात्रा के मेले आदि (जूलाई—अगस्त) के महीने में ६ दिन तक होते हैं जिस में १० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं, श्रीबिल्लीपुतूर जाने के लिये साऊथ इण्डियन रेलवे के सत्तूर स्टेशन पर उतरना चाहिये इसका फासला श्रीबिल्लीपुतूर से २५ मील है और वहां बैल गाड़ियां १॥) रुपया व २) रुपया तक किराये पर मिलती हैं पर मेले के दिनों में उनका किराया २) से ३॥) रुपया तक हो जाता है। श्रीबिल्लोपुतूर और सत्तूर में अंग्रेजों और देशी लोगोंके लिये बङ्गले और चत्तरम हैं ॥

श्रीबिल्लूर में मोटा कपड़ा पीतल और कांसी के बर्तन बनते हैं। मोटा कपड़ा, अनाज और रुई बाहर जाती है बारीक कपड़ा, और अंग्रेजी और देशी चीजें बाहर से आती हैं ॥

सरिंगा ।

मदरास अहाते में मैसूर रियासत के कदूर जिले में तुंगा दरिया के बांएं किनारे पर एक पवित्र गांव है। कहते कि सरिंगा ऋषि ने इस जगह जन्म लिया था और विभांदका ऋषि यहां तप किया करते

थे आठवीं सदी में शङ्कराचार्य काश्मीर से सारद अम्बा या सरस्वती की मूर्ति लाया और यहां अपना स्थान बनाया ॥

सारिंगा स्वामी जिस का नाम नरसिंह अचारी था और जो स्मारत ब्राह्मणों का जगत् गुरु था बड़ा बुद्धिमान था गांव में एकही बाजार है और इसकी पहाड़ी पर सारद अम्बा का मन्दिर है यहां साल में कई तेहवार होते हैं जिन में ३ हजार से १० हजार तक लोग आते हैं। इन मौकों पर सब यात्रियों को मठ की तरफ से बिना दाम खाना मिलता है और औरतों को कपड़े और आदमियों को पैसे दिये जाते हैं ॥

कदूर में इस गांव को जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

कदूर सदर्न मरहटा रेलवे पर बंगलौर शहर से १२७ मील हैं तीसरे दरजे का किराया १।-)। लगता है ॥

सल्लूरुपेटा ।

मदरास रेलवे पर स्टेशन है और पीलूर डिवीजन के तहसीलदार का सदर मुकाम है यह फलुंगी दरिया के बाएं किनारे पर वाके है और पोलूर से २ मील पूर्ब की तरफ है। पोलूर में एक बड़ा मन्दिर है जिस में कई मेले होते हैं और बहुत लोग आते हैं ॥

यह स्टेशन मदरास से ५२ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥६) लगता है ॥

सुलतानपुर ।

सूबा पंजाब के जिला कांगड़ा और कुलू तहसील में नगर है जो ब्यास दरिया के दाहने किनारे पर वाके है ॥

यह नगर कुलू के राजों सिक्खों और अब अंग्रेजों के इन्तिजाम

की जगह रखे हैं पर अब सब डिवीजन का सदर मुकाम ब्यास से ऊपर नगर में है ॥

यहां पर हरसाल बड़ाभारी मेला होता है जब ८० छोटे २ देवता रघुनाथ जी को दण्डवत करने जाते हैं ॥

एशिया और हिन्दुस्तान में इस रस्ते बहुत व्योपार होता है यहां एक सराय भी है। पठान कोट से धर्मशाला नगर तक तांगे और यक्के और वहां सें टट्टू और खच्चरें सुलतानपुर तक जाती हैं ॥

सुलतानपुर जाने के लिये नार्थ वेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के पठानकोट स्टेशन पर उतरना चाहिये। अमृतसर से पठान कोट ६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है।

श्रीनगर।

सूबा पंजाब के उत्तर की तरफ कश्मीर रियासत की राजधानी है और खूबसूरत घाटी में जेहलम दरिया के दोनो किनारों पर वाके है। शहर के दोनों हिस्से ७ पुलों के जरिये मिले हुए हैं दरिया पर कई सुन्दर घाट बने हुए हैं और शहर में नहरें हैं यहां कई बाजार और मण्डियां हैं जिन में से महाराज गंज बहुत खूबसूरत है उस में कश्मीर की बनी हुई सब चीज़ें मिल सक्ती हैं ॥

झील डल जिस की मूर साहब ने अपनी किताब लाला रुखमें बड़ी तारीफ़ की है शहर के उत्तर पूर्व की तरफ है इस झील की लम्बाई ४ मील और चौड़ाई २॥ मील है। इस पर बहुत जगह तैरने वाले बाग़ हैं इन में खीरा, ककड़ी और ख़रबूजे बहुत पैदा होते हैं। तैरने वाले बाग बहुत अजीब हैं और देखने के लायक हैं ॥

जहांगीर बादशाह की बनाई हुई सैरगाह जिस को शालामार बाग कहते हैं नसीम या राहत बाग जिस की बाबत कहते

हैं कि अकबर ने बनाई थी और निशात बाग बहुत खूबसूरत है शहर की बड़ी बड़ी इमारतें यह हैं:—

(१) बारादरी (२) किला (३) महल (४) शंकराचार्य का मन्दिर और तख्त सुलैमान जहां से शहर का बड़ा अच्छा नजारा दिखाई देता है ॥

गुलमर्ग श्रीनगर से २८ मील है यहां का नज़ारा बहुत खूबसूरत है अंग्रेज लोग दूर २ से इसको देखने आते हैं पर रस्ता छोटा है और उस पर घोड़े के सिवाय और सवारी नहीं जा सक्ती ॥

पंजाब से कश्मीर को पांच सड़कें जाती हैं मरी का रास्ता सब से छोटा है पर पीर पंजाल का सबसे खूबसूरत है। मरी और रावलपिंडी में तांगे बहुत मिलते हैं रावलपिंडी से श्रीनगर तक यके का किराया २७) रुपया से ३०) रुपये तक होता है। यका ५ दिन में श्रीनगर पहुंचता है रस्ते में सब पड़ाओं पर अंग्रेजों और देशियों के टिकने के लिये मकान बने हुये हैं ॥

रावलपिंडी कलकत्ते से ईस्टइण्डियन और नार्थ वैस्टर्न रेलवे में १३६३ मील बम्बई से जी० आई० पी० और नार्थवैस्टर्न रेलवे में १४८६ मील और बी० बी० एँड सी० आई याने बम्बई की छोटी लाइन के रस्ते १२७८ मील है तीसरे दरजे का किराया १४-) १५॥=) और १२॥-) लगता है ॥

श्रीनगर में एक सराय है और नीडो का होटल गरमी में खुल जाता है।

सोरन।

सूबा आगरा और अवध के जिला इटा और तहसील काशगंज में बढ़गंगा के किनारे पर नगर है। इटा से उत्तर पूर्व की तरफ बरेली

हाथरस कोल्सड़क पर २७ मील के फासले पर वाके है। सोरन बड़ा पुराना नगर है पहिले इस का नाम उकाला क्षेत्र था पर जब विष्णु ने शेर के अवतार में हिरण्यकश्यप राक्षस को मारा तो इस का नाम सुकारा क्षेत्र हो गया। इस जगह बहुत से यात्रा के मेले होते हैं। हिन्दू लोग मथुरा से लौटते हुये सोरन आकर बढ़गंगा में जिस के किनारे पर बहुत से सुन्दर मन्दिर और घाट बने हुये हैं स्नान करते हैं। सोरन में आधे के करीब ब्राह्मण बसे हुये हैं उन के सिर पर लाल पगड़ी होती है। मन्दिरों के गिर्द पीपल के रूख लगे हैं। गिनती में यहां सारे ६० मन्दिर हैं सोरन का सब से बड़ा मेला नवम्बर के महीने में एकादशी का होता है इस दिन भगवान् ने अजमेर के पास पुस्कर पवित्र जगह में जन्म लिया था। मेला १५ दिन रहता है और इस में हजारों यात्री आते हैं॥

सोरन से दो मील एक छोटी सी नदी के किनारे पर ऋषि भागीरथ की गुफा है। भागीरथ इस जगह हजारों वर्ष तक तप और पूजा पाठ में लगा रहा आखिर उस की बिनती मनज़ूर हो गई और गंगा जी ने स्वर्ग से आकर राजा सागर के लड़कों की जो कापला मुनि के श्राप से भस्म हो गये थे मुक्ति कराई, इसका पूरा हाल भागीरथी के नीचे देखो॥

सोरन में एक सराय और ६ सुन्दर धर्मशालायें हैं पर यात्री लोग अपने प्रोहितों के घरों में ठहरते हैं। सोरन में अनाज का बड़ा व्योपार होता है॥

सोरन रुहेल खंड कुमाऊं रेलवे पर है इस का फासला बरेली से ५५ मील, कानपुर से १६२ और आगरा फोर्ट से १०२ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥~)।, १~) और १~) लगता है॥

सोनपुर।

अहाता बंगाल के जिला सारन में बड़ा मशहूर गांव है। यह गंडक और गंगा जी के संगम पर वाके है और बड़े मेले के सबब से जो कार्तिक के महीने में पूरे चांद के मौके पर दस दिन तक होता है मशहूर है यह मेला हिंदुस्तान के सब मेलों से पुराना है कहते हैं कि रामचन्द्र जी और सीता जी के जमाने से चला आता है, और सोनपुर में ही विष्णु ने एक हाथी को जो पानी पीने गया था मगर मच्छ से बचाया था और पीछें इस जगह रामचंद्र जी ने सीता के जीतने के वास्ते जनकपुर जाते हुये एक मन्दिर बनाया था इस सबब से सोनपुर बहुत पवित्र समझा जाता है। मेले में बहुत लोग आते हैं मेले के पहिले और पिछले दो दो दिन गंगा जी में स्नान होता है॥

हाथी घोड़ों और अङ्गरेजी चीजों का ब्योपार होता है। सोनपुर में हर साल घोड़दोड़ भी होती है॥

सोनपुर बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे का जंकशन है इसका फासला काटीहार से १७० मील है और तीसरे दरजे का किराया १।०) है॥

सीनगढ़।

बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे पर पालीताना से १५ मील के फासले पर है। यहां एक बड़ी अच्छी धर्मशाला है और पालीताना जाने के लिये असिसटंटपुलिटिकल एजंट को दरखास्त करने पर सवारी मिल सकती है॥

पालीताना में जैनियों के बड़े बड़े और नामी मन्दिर हैं शत्रुंजय पहाड़ी की सारी चोटी पर मन्दिर बने हुये हैं। वहां कई धर्मशालायें हैं सवारी के लिये डोलियां मिल सकती हैं, डोली का किराया ६ आने से दो रुपये तक होता है॥

सोनगढ़ भावनगर से १८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।) लगता है ॥

सोनगिर ।

जी० आई० पी० रेलवे पर है। स्टेशन के पास एक पहाड़ी पर बहुत से मन्दिर हैं जिनके दर्शन को यात्री हिंदुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं। यह जगह रेल में से दिखाई देती है। जैनी लोग इस जगह को बहुत पवित्र मानते हैं मन्दिर कई ढंग के बने हुए हैं। जैनियों का नया मन्दिर बहुत सुन्दर है। स्टेशन पर वेटिंग रूम बने हुये हैं ॥

सोनागिर बम्बई से ७२५ मील और दिल्ली से २३३ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ११।-) और ३।≈) और सवारी गाड़ी में ८।) और ३१) लगता है ॥

सोमनाथ ।

अहाता बम्बई की जूनागढ़ रियासत में पुराना नगर है जो वेरावाल बंदर के पास वाके है। यह बड़ा पवित्र और इतिहासी नगर है। यहां माल और फौजदारी के अफसर भी रहते हैं समुद्र के किनारे पर शिवजी का बड़ा भारी मन्दिर है। मन्दिर के पीछे एक हौज़ है जिसको भातकुण्ड कहते हैं, कहते हैं कि यहां कृष्ण जी का काल हुआ था सोमनाथ के इर्द गिर्द कृष्ण जी की यादगार की बहुत जगह है उन में से सब से बढ़कर तीन नदियों के संगम पर एक जगह नगर के पूर्व की तरफ है यहां कहते हैं कि कृष्ण जी की लोथ जलाई गई थी। यहां और भी हिंदुओं के मन्दिर हैं यहां बहुत यात्री आते हैं यह नगर कई हिन्दू और मुसलमान राजों के हाथ मे रहा है ॥

सोमनाथ में लकड़ी और लोहे के बने हुए ताले बहुत मशहूर हैं। इस नगर को देव पट्टन, प्रभास पट्टन, वेरावाल पट्टन या पट्टन सोमनाथ भी कहते हैं ॥

वेरावाल भावनगर जूनागढ़ पोरबन्दर रेलवे पर है इस का फासला भावनगर से१७८मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥-)लगता है॥

सीतामढ़ी।

अहाता बंगाल के जिला मुज़फरपुर में नगर और सीतामढ़ी सब डिवीजन का सदर मुकाम है जो लखादनी के पश्चिमी किनारे पर वाके है। चैत्र के महीने में बड़ा भारी मेला होता है इस का सब से बड़ा दिन शुक्ल पक्ष की नौमी या रामनौमी याने रामचन्द्र जी के जन्म का दिन होता है यह मेला १५ दिन रहता है और दूर दूर से लोग आते हैं कहते हैं कि एक दिन राजा जनैक हल चला रहा था हल एक मिट्टी के बासन में लगा जिस में से सीता जी निकल आई। यहां ६ मन्दिर हैं जिन में से ५ सीता के मन्दिर के अहाते में हैं, यह मन्दिर सीता, हनुमान्, शिव और दही के हैं ॥

इस जगह जन्जू बनते हैं। चावल, सखवा की लकड़ी तेल के बीज और चमड़े का व्योपार होता है ॥

सीता मढ़ी बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे पर स्टेशन है इस का फासला दरभंगा से ४२ मील है तीसरे दरजे का किराया।=)लगता है ॥

सीपी।

सूबा पंजाब के जिला शिमला में एक छोटी सी रियासत कोटी में गांव है। यहां के राजा को १८५७ के गदर में मदद करने के सबब

राना का खिताब मिला था। राना के बाप दादा बड़े पटना से आए थे मशोबरा भी कोटी रियासत में है मशोबरे के पूर्व की तरफ एक घाटी में सीपी गांव है जहां हरसाल मई के महीने में मेला होता है इर्द गिर्द के पहाड़ी गावों और शिमले से देशी और अंग्रेज इस मेले में बहुत आते हैं। नलदेरा भी कोटी रियासत में छोटा सा गांव है जो एक सुहावने मैदान पर वाके है अंग्रेज लोग यहां अकसर सैर के लिये जाते हैं सीपी शिमले से ७ मील के करीब है और नलदेरा १२ मील के करीब शिमले में यहां जाने के लिये रिक्षा गाड़ियां और घोड़े मिलते हैं॥

सीता कुण्ड।

सूबा पूर्वी बंगाल और आसाम के जिला चिटा गांव में सीता कुण्ड पर्ब्बत की सब से ऊंची चोटी है। कहते हैं यहां एक पवित्र पानी का चश्मा भी था जो अब सूख गया है पर उसकी जगह को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और यात्री हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं कहते हैं कि यहां रामचन्द्र जी और शिवजी दोनों आये थे और शिव जी की पृथ्वी पर यह सब से मन भावनी रहने की जगह है। फरवरी के महीने में शिव चतुर्दशी चांद की चौदहवीं रात को मेला होता है जो दस दिन तक रहता है इस में २० हजार के करीब लोग आते हैं। इस जगह के ब्राह्मणों ने जिन को अधि-कारी कहते हैं घर बनाये हुये हैं जिन में यात्री लोग ठहरते हैं कहते हैं ब्राह्मणों को मेले के दिनों में ४५ हजार से ६० हजार तक रुपया आता है। सीताकुण्ड या चन्द्रनाथ पर्ब्बत पर चढ़ने से यात्री अगले जन्म की तकलीफ से बच जाते हैं। बंगालों साल के आखरी दिन एक जगह इस पर्ब्बत पर बुद्ध लोगों का भी मेला

होता कहते हैं कि यहां बुद्ध की लोथ जलाई गई थी। बुद्ध लोग अपने मरे हुए सम्बन्धियों की हड्डियां एक गढे में लाकर डालते हैं यहां और भी कई छोटे छोटे मेले मार्च और नवम्बर के महीनों में और सूर्य और चांद ग्रहण के मौकों पर होते हैं॥

सीता कुण्ड आसाम बंगाल रेलवे का स्टेशन है, इस का फासला चिट्टागांव से २३ मील है और तीसरे दरजे का किराया।~)॥ लगता है॥

सिंगारा या कोंडा।

मद्रास रेलवे पर एक छोटा सा गांव है। जिस की आबादी १०६८ है। यह गांव समुद्र से ४ मील और तालुक के हैडक्वार्टर कन्दूकर से ८ मील के फासले पर है इसजगह दो मन्दिर हैं, एक नरसिंहा स्वामी का और दूसरा वरुहा स्वामी का, अप्रैल के महीने में दूसरे मन्दिर का मेला होता है॥

मद्रास से इस स्टेशन का फासला १६५ मील है और तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है॥

सिधपुर।

बड़ोदा रियासत के कादी जिले में अहमदाबाद से ६४ मील सरस्वती पवित्र दरिया के किनारे पर नगर है। इस जगह रूद्रमाला शिवजी का मन्दिर है जिसकी बाबत डाक्टर बरजस साहब लिखते हैं कि इसके बड़े बड़े टुकड़े जो अब तक हैं देख कर हैरान होजाते हैं। सिधपुर बड़ी मशहूर हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है और सब जातों के यात्री मन्दिर के दर्शन करने और दरिया में स्नान करने के लिये आते हैं। यहां एक पवित्र पाठशाला या स्थल भी है। केवलापुरी गसाबी अतीत लोगों के लिये सिधपुर से १५ मील उत्तर की

तरफ पुराना नगर पटन है यह पहले बलहारा बंश के राजों की राजधानी थी और कहते हैं ४७५ ई० में बना था और होते होते बड़ा भारी नगर बन गया था। १००० ई० में इस का घेरा १८ मील था जिस में बहुत से मन्दिर और कालिज थे और मालूम होता है कि उस वक्त यह बड़े ब्योपार की जगह थी क्योंकि हर रोज़ चुंगी का महसूल ५ हज़ार रुपये होता था। यह गुजरात के हाकमों की देर तक राजधानी रही चौदहवीं सदी में राजधानी अहमदाबाद में बदल गई और नई राजधानी को सजाने के लिये पटन का कुछ हिस्सा गिरा दिया गया था पर अब भी छोटे बड़े बहुत मन्दिर हैं सब देखने के लायक हैं। यहां की आबादी ४० हजार के करीब है जिस में से बहुत हिस्सा जैनियों का है जिनकी पुस्तकशालाएं बड़ी अजीब हैं इन में बहुत सी किताबें खजूर के पत्तों पर लिखी हुई हैं॥

सिधपुर बी० बी० ऐण्ड सी० आई रलेवे का स्टेशन है इस का फासला बम्बई से ३७४ मील और ४७५ मील दिल्ली से है और तीसरे दरजे का किराया ४) और ४।) लगता है॥

स्टेशन के पास देशी लोगों के लिये एक धर्मशाला है और एक बंगला भी जिस में अंग्रेज लोग रियासत की इजाजत से ठहर सक्ते हैं॥

सिध्देश्वर।

सूबा पूर्वी बंगाल और आसाम में सारसपुर पर्ब्बत के पास एक गांव है। यहां हिन्दुओं का एक नामी मन्दिर है और मार्च के महीने में यहां मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं। उन्हीं दिनों में दरिया के दूसरे किनारे पर एक स्नान मेला होता है। कहते हैं कि पतंजली के साथी ऋषि कपिला मुनि इसी जगह रहा करते थे॥

इस गांव के लिये असाम बंगाल रेलवे बदरपुर स्टेशन पर उतरना चाहिये। चिट्टागांग स्टेशन का फासला २५२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥≡) लगता है॥

सियालकोट।

सूबा पंजाब में शहर छावनी और जिला सियालकोट का सदर मुकाम है जो नार्थ वैस्टर्न रेलवे की वजीराबाद जम्बू शाख पर पेशावर से २५३ मील और दिल्ली से ४३८ मील के फासले पर वाके है तीसरे दरजे का किराया इन दोनों मुकामों से २॥≡)॥ और ४॥)॥ है। कहते हैं कि इस शहर को पांडव के चचा राजा साल ने बसाया था। सन् ७० ई० के करीब राजा सालिबाहन ने इस को फिर आबाद करके अपनी राजधानी बनाया। राजा के पुत्र रसालू की बहादुरी की बहुतसी बातें हिन्दुओं में मशहूर हैं रसालू की गक्खड़ लोगों के सर्दार राजा हूदी से बहुत दिन तक लड़ाई होती रही आखिर जब हार हुई तो अपनी पुत्री का विवाह हूदी के साथ करके उस से सुलह करली और राजा रसालू के बेटा न होने के सबब उस के मरने के बाद राज्य गद्दी राजा हूदी के हाथ आगई॥

सियालकोट खुला, खूबसूरत और सुथरा शहर है। बाजार भी खुले हैं और सफाई का इन्तजाम अच्छा है। यह शहर बड़े व्योपार की जगह है, सूसी और कागज बनता है। यहां के नावड़े बड़े व्यौपारी और धनी हैं शहर में मुसाफिरों के लिये बहुत सरायें हैं और छावनी में स्टेशन से २॥ मील के करीब एक बंगला है। गाड़ियां और यक्के हर वक्त किराये पर मिलते हैं। इस शहर में जो मकान देखने के लायक हैं नीचे लिखे जाते हैं॥

१ किला जो अब गिर गया है॥

२ तेजसिंह का मन्दिर॥

३ बाबा नानक साहिब की समाध, यहां हर साल बड़ा भारी मेला लगता है ॥

४ दर्बार बावली साहिब यह एक छत दार कुआ है जो एक सिक्ख राजपूत ने बनवाया था यह भी सिक्खों की बड़ी पवित्र जगह है ॥

५ इमामअली अलहक की खानगाह यह बड़ी खूबसूरत इमारत है ॥

इनके सिवाय जिले के दफतर भी हैं ॥

छावनी सियालकोट शहर से एक मील के करीब उत्तर की तरफ वाके है बड़ी खुली और खूबसूरत बनी हुई है इस का आम बाग़ २७ एकड़ में फैला हुआ है इस में खेलने के मैदान पुस्तकालय हैं ॥

हरिद्वार।

सूबा आगरा और अवध में बड़ा पुराना नगर है। इस के कई नाम हो चुके हैं। हरिद्वार या विष्णु का दरवाज़ा बहुत पुराना नहीं है। इस के पुराने नाम मायूरा या मायापुर इस को शिव जी का स्थान जाहर करते हैं। अकबर के राज्य में अबुलफ़ज़ल लिखता है कि गंगा जी के किनारे पर हरिद्वार की धरती ३६ मील तक पवित्र है। उस से अलग राज्य में टाम कोरट साहिब यहां गए और इस को हरा द्वारा या शिव जी का द्वारा लिखते हैं। शिव जी और विष्णु के आधीनों में आज तक झगड़ा है कि दोनों देवताओं में से किस ने गंगा जी को बनाया। दोनों विष्णु पुराण का हवाला देते हैं जिस में लिखा है कि गंगा जी विष्णु ने और अलकनन्दा या गंगा जी की पूर्बी शाख शिवजी ने बनाई। शिवजी के आधीन कहते हैं कि इस का नाम हराद्वारा या शिव जी का द्वारा है और विष्णु के

आधीन कहते हैं कि हराद्वारा या विष्णु का द्वारा कहते हैं। हरिद्वार के और भी नाम हैं इस को कपिला या गपिला भी कहते हैं और एक जगह कपिल ऋषि के नाम पर अब तक कपिला स्थान कहलाता है हियून संग चीनी बुद्ध यात्री सातवीं सदी ई० में यहां आया और एक नगर का नाम मोयली लिखता है जिस के खण्डर आज कल के नगर के दक्खिन में अब तक हैं। हरिद्वार के मन्दिर जिन के दर्शन यात्री करते हैं यह हैं:—

(१) चन्दी पहाड़ गंगा जी के बाएं किनारे पर है॥

(२) माया देवी का मन्दिर॥

(३) सरवनाथ का मन्दिर इस के बाहर बुद्ध की मूर्त्ति है॥

हरिद्वार में हरि के चर्ण घाट सब से बढ़कर है और इस के पास गंगा द्वारा मन्दिर है घाट की ऊपर की दीवाल में एक पत्थर है जिस पर विष्णु के पाओं का निशान है यात्री लोग इसका बड़ा आदर करते हैं। बैशाख महीने के पहिले दिन यहां बड़ा भारी मेला होता है इसी दिन गंगा जी आकाश से पृथ्वी पर आई थी। बारहवें साल कुम्भ का मेला होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं इन के सिवाय होली, दखौती, दशहरा ज्येष्ट और कार्तिक पूनों के मेले हरिद्वार से एक मील के फासले पर मार्च, अप्रैल, जून, और नवम्बर के महीनों में होते हैं जिन में ६ हजार ८० हजार, ८ हजार और ५ हजार यात्री आते हैं॥

कनखल यहां से २ मील के करीब दक्खिन पूर्व की तरफ है इस में कई मन्दिर हैं और बहुत यात्री यहां जाते हैं। कनखल के नामी मन्दिर यह हैं (१) राजा दक्षप्रजापति का मन्दिर (२) सतीकुण्ड (३) राजा लन्धौरा का मन्दिर और (४) दक्ष स्थान जहां राजा दक्षने यजन किया था पर उस में शिवजी सति के पति को न बुलाया बल्कि

उसको गालियां दी सती को अपने पति को बिना कसूर गालियां देते सुनकर क्रोध आया और उसने उस जगह जिस को सतीकुण्ड कहते हैं योगअग्नि से अपना शरीर भस्म किया ॥

हरिद्वार अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर स्टेशन है कलकत्ते से इसका फासला ६२१ मील और सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥।९) और ॥९)। लगता है ॥

हरिद्वार में बहुत धर्म्मशालायें हैं ॥

हस्तिनापुर ।

सूबा आगरा और अवध के जिला मेरठ में पुराने हस्तिनापुर की जगह के पास एक गांव है। पुराने हस्तिनापुर को हस्तिने जो बलवंत राजा भरत के वंश में से था बसाया था और इस जगह पांडव और कौरव में बड़ी भारी लड़ाई हुई थी। पुराना नगर अब अलोप होगया है। नया गांव मेंरठ से २२ मील है और हिन्दू इसको पवित्र मानते हैं॥

कातिक के पूरे चांद के मौके पर जैनियों के ऋषियों और महापुरुषों की यादगार में एक मेला होता है जिस में २० हजार के करीब यात्री आते हैं जिन में जियादा श्रावगी होते हैं जैनियों के दोनों मन्दिरों के साथ कुछ मकान बने हुये हैं जिन में यात्री लोग उतरते हैं ॥

मेरठ में हस्तिनापुर जाने के लिये बैल० गाड़ियां और यक्के मिलते हैं। बैलगाड़ी का आने जाने का किराया १=) रु० और यक्के का ८) होता है यक्के मनावां तक ही जासक्के हैं क्योंकि अगले ६ मील का रास्ता कच्चा है ॥

मेरठ शहर नार्थ वैस्टर्न रेलवे में दिल्ली से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया ।९)॥। लगता है ॥

हिन्दौन।

राजपूताना की जयपुर रियासत में नगर है जो आगरे से मह्ह की पुरानी सड़क पर वाके है। हिन्दौन रोड स्टेशन यहां से ३५ मील है और बीच में पक्की सड़क बनी हुई है पहले यह बड़ा भारी नगर था। यहां महाबीर का मेला चैत्र सुदी पूर्णमा (मार्च) के महीने में होता है जिस में एक लाख के करीब यात्री आते हैं॥

हिन्दौन स्टेशन राजपूताना मालवा रेलवे पर है इस का फासला आगरा फोर्ट जंकशन से ७४ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)। लगता है॥

स्टेशन पर नगर जाने के लिये यक्के मिलते हैं। नगर में डाक बंगला और एक अच्छी धर्म्मशाला है॥

हरदा।

जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लाइन पर स्टेशन है यहां से १० मील के करीब नमांवर गांव है जिसमें हिन्दुओं क पवित्र मन्दिर हैं। प्राचीन विद्यावाले लोगों के लिये बम्बई से यहां तक का सफर बड़ा मनभावना है। यहां असिस्टेंट कमिश्नर की कचहरी और देशियों के लिये हस्पताल भी है। जी० आई० पी० रेलवे की बनाई हुई पुस्तकालय बड़ी सुन्दर है, और जब गाड़ी स्टेशन के पास पहुंचती है तो वह गाड़ी में से दिखाई देती है॥

हरदा से अनाज बहुत बाहर जाता है। यहां रुई निकालने और दबानेके भी कारखाने हैं स्टेशन पर अंग्रेजों और देशियों के लिये वेटिंगरूम याने मुसाफरखाने बने हैं और एक बड़ी सराय भी है जो स्टेशन से दिखाई देती है॥

हरदा बम्बई से ४१७ मील और दिल्ली से ५४१ मील है

तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥) और ८=) और सवारी गाड़ी में ४।=) और ६॥।=) लगता है॥

हासपत।

मदरास अहाते के बिलारी जिले में नगर और सदर्न मर्हटा रेलवे का स्टेशन है यहां तहसीलदार और सब मजिस्ट्रेट की कचहरियां भी हैं। स्टेशन से ७ मील के करीब तुंगभद्रा दरया के किनारे पर हम्पी उजड़ा हुआ नगर है पहले यह नगर विजयानगर के राजाओं की राजधानी था पीछे बीजापुर और गोलकण्डा के राजों के हाथ आया। विजयानगर के राजों के राज्य में यह नगर बहुत बढ़ गया था और इस में बहुत से सुन्दर महल बन गये थे। कैसरफरेड्रिक साहब लिखते हैं कि मैंने राजा बिजियानगर के महल जैसा कहीं नहीं देखा। खण्डरों में विथोबा का मन्दिर, महल हाथियों का तबेला और कई और मकान अबतक हैं यहां मार्च व, अपरैल के महीने में एक मेला होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है और ८ मील के फासले पर कमालापुरम में एक अच्छा डाक बंगला भी है॥

हासपत पूना से ४२३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।=)॥ लगता है॥

होशंगाबाद।

जी० आई० पी० रेलवे पर है स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है होशंगाबाद कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर और असिस्टैंट कमिश्नरों का सदर मुकाम है। नर्बदा दरिया इस नगर के पास से गुजरता है उस पर भूपाल रियासत ने सुन्दर पुल बनाया हुआ है। कार्त्तिक

सुदी (नवम्बर) में यहां नर्बदा और बड़ा तवा दरियाओं के संगम पर वृन्द्राबन जगह पर बड़ा भारी मेला होता है इस जगह महादेव का मन्दिर है ॥

गिरजे के सामने स्टेशन से एक मील के क़रीब एक बंगला है और कई धर्म्मशालायें हैं जिन में से ६ के क़रीब मन्दिरों के साथ हैं, और एक नर्बदा दरिया के किनारे पर है और एक जो राम जी बाबा की धर्म्मशाला कहलाती है स्टेशन के सामने ही है। यहां से पत्थर की सिलें बाहर जाती हैं ॥

होशंगाबाद बम्बई से ४७६ मील और दिल्ली से ४८२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक. गाड़ी में ७।≶) और ७।-) और सवारी गाड़ी में ४|||≶)||| और ६≶) लगता है ॥

ज़मीमा पहिला।

रेलवे एकट ६ सन् १८६० ई० का खुलासा आम लोगों की खबर के वास्ते नीचे दर्ज किया जाता है:—

आम क़वायद

दफा ४७ (६) हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि अपनी रेलवे के हर स्टेशन में उन आम क़वायद की एक नक़ल रख दिया करे जो दफ़ा हाज़ा की रू से रेलवे मज़कूर में बर वक़्त जारी रहें और यह लाज़िम होगा कि तमाम मुनासिब वक़्तों में क़वायद मज़कूर के बिला तलब रसूम देखने की हर शख़्स को इजाज़त दे॥

हर कमरे के लिये मुसाफिरों की तादाद ग़ायत

दफा ६३—हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि जनाब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर व इजलास कौंसल की मंजूरी की पाबन्दी के साथ हर किस्म की गाड़ी के हर एक कमरे में जिस कदर के मुसाफिर ले जाए जा सकें उनकी तादाद ग़ायत मुकर्रर कर दे और यह भी लाज़िम होगा कि हर कमरे के अन्दर या बाहर नुमायां तौर पर तादाद मुकर्रर मज़कूरा ज़ाहर कर दे ख़्वाह अंग्रेजी ज़बान में या एक या ज़ियादा देशी ज़बानों में जो उस कलमरौ में अमूमन मुसतामिल हों जहां से रेलवे गई हो या दोनों में यानी अंग्रेज़ी ज़बान में और एक या ज़ियादा ऐसी देसी ज़बानों में जो जनाब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर बइजलास कौंसल मुन्तज़िम रेलवे से मशवरा करने के बाद ठहरा दें॥

कमरों का औरतों से मख़सूस कर रखना

दफा ६४ (१) सन् १८६१ ई० की जनवरी की पहली तारीख को और उस के बाद से हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि हरएक

ट्रेन में जिस में, मुसाफिर जाते हों सब से नीचे दरजे की गाड़ी का जो उस ट्रेन का अज़्व हो कम से कम एक कमरा औरतों के इस्तेमाल के लिये मख़सूस कर रक्खे॥

(२) ऐसा एक कमरा जो हस्ब मज़कूरा बाला मख़सूस कर रक्खा जाय उस में एक पाख़ाना भी होना चाहिये अगर ट्रेन ५० मील से ज़ियादा दूर जाने वाली हो॥

नक्शा औक़ात और नक्शा महसूल को स्टेशनों में नुमायां करना

दफा ६५-हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि अपनी रेलवे के हर स्टेशन के किसी नुमायां और ऐसी जगह में जहां पहुंचा जासके बज़बान अंग्रेज़ी और किसी ऐसी देसी ज़बान में जो उस कलमरौ में आम तौर पर मुसतामिल हो जहां वह स्टेशन वाक़े हैं उन नकशाहा औक़ात की एक नकल जो उस रेलवे में बरवक़्त ज़ारी रहें और उन महसूलात की फेहरिस्तें चसपां कराए जो उस स्टेशन से जहां फेहरिस्तें लटका दी गई हैं हर ऐसे मुक़ाम तक सफ़र करने की बाबत तलब किये जाते हैं कि जिस मुक़ाम के लिये कार्ड टिकट उस स्टेशन में मुसाफ़िरों को मामूलन बांटे जाते हैं॥

उस सूरत की निसबत हुक्म जब कि ऐसी ट्रेन के लिये टिकट बंट चुके हों जिस में ज़ियादा मुसाफिरों की जगह न हो

दफा ६७ (१) महसूल का क़बूल किया जाना और टिकट का बटना उसवक़्त समझा जाएगा जब कि उस ट्रेन में जगह रहे जिसके लिये टिकट बटते हों॥

(२) अगर किसी शख़स को टिकट दिया गया हो और उस को उस ट्रेन में जगह न मिले जिस के लिये टिकट बटा था तो उस

शख़्स को ट्रेन के चले जाने के बाद तीन घण्टे के अन्दर टिकट फेर देने पर इस्तहक़ाक़ इस बात का होगा कि अपना महसूल फ़ौरन वापिस ले ले ॥

(३) वह शख़्स जिसके वास्ते उस दरजे की गाड़ी में जिसके लिये उसने टिकट खरीदा हो कोई जगह न हो और जिस को किसी नीचे दरजे की गाड़ी में बमजबूरी सफर करना पड़ा हो अपना टिकट हवाले कर देने पर मुस्तहिक़ इस बात का होगा कि जो महसूल उसने अदा किया हो उसके और उस महसूल के दरमियान जो उस दरजे की गाड़ी की बाबत वाजिबुलअदा है जिस पर उसने सफर किया है जिस क़दर फ़र्क निकले वह उसे वापिस मिले ॥

ऐसे आदमियों के लेजाने से इनकार करने का इख़्तियार जो मुतअद्दी या छूतवाली बीमारी में मुबतिला हों

दफा ७१ (१) मुन्तज़िम रेलवे को इख़्तियार है कि किसी ऐसे शख़्स के लेजाने से इनकार करे जो किसी मुतअद्दी या छूतवाली बीमारी में मुबतिला हो इल्ला उन शरतों के मुताबिक जो दफा ४७ की दफ़ा तहती (१) के ज़िम्मन ५ की रू से मुकर्रर हैं ॥

(२) जो शख़्स वैसी बीमारी में मुबतिला हो उसको लाज़िम होगा कि किसी रेलवे में स्टेशनमास्टर या उस मुकाम के जिम्मेवार किसी और मुलाज़िम रेलवे की मन्जूरी खासके बिदून जहां वह रेलवे मज़कूर में दाखिल हो किसी रेलवे में दाखिल न हो या सफर न करे ॥

(३) उस मुलाज़िम रेलवे पर जो वैसी इजाज़त देता हो जिसका दफा तहती (२) में जिक्र है वाजिब होगा कि उस शख़्स का जो उस बीमारी में मुबतिला हो ऐसे और लोगों से जूदा रखने का इन्तिज़ाम करे जो रेलवे पर हों या रेलवे पर सफर करते हों ॥

ऐसे कमरे में दाखिल होना जो मखसूस कर रखाजाए या जो आगे से भराहुआहो या ऐसे कमरे में दाखिल होने से रोकना जो भरा हुआ न हो

दफा १०८ (१) अगर कोई मुसाफिर किसी गाड़ी के ऐसे कमरे में दाखिल होकर जिसको किसी मुन्तज़िम रेलवे ने किसी और मुसाफिर के इस्तेमाल के लिये मखसूस कर रखा हो या जिस में मुसाफिरों का ऐसा तादाद गायत आगे से मौजूद हो जो उस कमरे के अन्दर या बाहर दफ़ा ६३ की रू से लिखी रहे मुलाज़िम रेलवे के कहने पर भी उस से निकलने से इनकार करे तो उसको ऐसे जूरमाने की सज़ा होगी जिस की हद २०) तक हो सक्ती है॥

(२) अगर कोई मुसाफिर गाड़ी के किसी ऐसे कमरे में किसी और मुसाफ़िर को जायज तौर पर दाखिल होने से रोके जिस को मुन्तज़िम रेलवे ने रोकने वालेमुसाफिर के इस्तेमाल के लिये मखसूस न कर दिया हो या जिस में मुसाफ़िरों की वह तादाद गायत आगे से मौजूद न हो जो उस कमरे के अन्दर या बाहर दफ़ा ६३ की रू से लिखी रहे तो उसको ऐसे जूरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद २०) रु० तक हो सकती है॥

तम्बाकू पीना

दफा ११० (१) अगर कोई शख्स उन मुसाफिरों की (अगर कोई हो) रजामन्दी के बिदून जो उसके साथ गाड़ी के एकही कमरे में हों बजुज़ गाड़ी के उस कमरे के जो उस काम के लिये खास कर दिया गया हो गाड़ी के किसी कमरे में तम्बाकू पिये तो उसको ऐसे जूरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद २०) रु० तक होसकती है॥

(२) अगर कोई शख्स इस तरह पर तम्बाकू पीता ही रहे बाद इसके कि उसको किसी मुलाज़िम रेलवे ने इस से बाज़ रहने के

लिये खबरदार कर दिया हो तो उसको कोई मुलाज़िम रेलवे अलावा उस मवाखजे के जिसका दफा तहती (१) में जिकर है उस गाड़ी से जिस में वह सफ़र करता हो निकाल दे सकता है ॥

पास या टिकटके बेगैन या गैरकाफ़ी पास या टिकट के साथ या मुसाफ़त मजाज के बाहर सफ़र करना

दफा ११३ (१) कोई मुसाफिर किसी ट्रेन में अपने साथ ठीक पास या ठीक टिकट न रख कर सफर करे या ट्रेन में रहते हुए या ट्रेन से उतरने पर फौरन अपना पास या टिकट मुआयने के लिये पेश न करे या पेश करने से इनकार करे या हवाले न करे जब कि उस से दफ़ा ६९ की रू से वह पास या टिकट तलब किया जाए तो किसी ऐसे मुलाज़िम रेलवे के तलब करने पर जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ़ से इस काम के लिये मुकर्रर किया गया हो वह ऐसे महसूल मजीद के अदा करने का मस्तौजिब होगा जो बाद अज़ीं इस दफ़ा में मज़कूर है अलावा उस मामूली इकैहरे महसूल के उस मुसाफ़त के लिये जो वह तै कर चुका हो या जब इस अमर में शुभा हो कि किस स्टेशन से वह रवाना हुआ था तो अलावा उस मामूली इकैहरे महसूल के उस स्टेशन से जहां से ट्रेन इबतदाअन रवाना हुई हो या अगर उन मुसाफिरों के टिकटों का जो उस ट्रेन पर सफ़र करते हों ट्रेन के इबतदाअन रवाना होने के बाद मुआइना हो गया हो तो इलावा उस मामूली इकहरे महसूल के उस मुकाम से जहां टिकटों का मुआएना होगया हो या उन के एक बार से जियादा मुआएना होने की तसदीक में उस मुक़ाम से जहां आखीरबार मुआएना हुआ हो ॥

(२) अगर कोई मुसाफिर किसी ऐसी गाड़ी में या ऐसी गाड़ी पर या ऐसी ट्रेन के जरिये से सफर करे या सफ़र करने का कस्द करे जो उस गाड़ी या ट्रेन से आला दर्जे की हो जिस के लिये उसने

पास हासिल किया था टिकट खरीद किया हो या ऐसी गाड़ी में या ऐसी गाड़ी पर उस मुकाम के बाहर सफर करे जहां तक की उसको बज़रिये उसके पास या टिकट के इजाजत है तो वह ऐसे मुलाज़िम रेलवे के तलब करने पर जो मुन्ताज़िम रेलवे की तरफ से इस काम के लिये मुकर्रर हो ऐसे महसूल मजीद के अदा करने का मस्तौजिब होगा जिसका बाद अर्ज़ी इस दफा में जिकर है अलावा उस जरे फर्क के जो उस के अदा किये हुये महसूल और उस सफर के महसूल के दरमियान निकले जो उसने किया हो ॥

(३) जिस महसूल मजीद का दफा तहती (१) और दफ़ा तहती (२) में जिकर है वहः— .

(अलिफ़) जब कि मुसाफिर पर महसूल आयद होने के बादही और किसी मुलाज़िम रेलवे के गिरफ्त करने के क़बल उस मुलाजिम रेलवे का जो ट्रेन में नौकरी पर हो महसूल आयद होने का हाल बयान कर दे तो १) रु० या दो आने या आठ आने होगा और

(बे) किसी और सूरत में ६) रुपया या १) रुपया या ३) रुपया होगा। याने अगर मुसाफिर किसी आला दरजे की गाड़ी में या किसी अदना दरजे की गाड़ी में या किसी और दरजे या किसम की गाड़ी में सफ़र करता हुवा सफ़र कर चुका या उसने सफ़र करने का कस्द किया हो तो बएतबार उस दरजा या किसम की गाड़ी के जिसपर वह सफ़र करता या सफ़र करचुका या उसने सफ़र करने का कस्द किया हो मगर शर्त यह है कि महसूल मजीद मज़कूर किसी सूरत में:—

(अलिफ़) जब कि उस के अदा करने का वजूब हस्ब दफा तहती (१) और पैदा हो उस मामूली या इकैहरे महसूल की तादाद से जियादा न हो जिसके अदा करने का वह मुसाफिर जिस पर वह महसूल आयद हुआ दफ़ा तहती मज़कूर की रू से मस्तौजिब है या

(बे) जबकि बजूब मज़कूर हस्ब दफ़ा तहती (२) पैदा हो उस ज़रे फर्क से ज़ियादा न हो जो उस मुसाफिर के अदा किये हुये महसूल जिस पर महसूल मज़कूर आयद हुआ हो और उस सफ़र के महसूल के दरमियान निकले जो उसने किया हो ॥

(४) अगर कोई मुसाफिर जो ऐसे महसूल मज़ीद और महसूल के अदा करने का मुस्तौजिब हो जिसका दफा तहती (१) में ज़िकर है या ऐसे महसूल मज़ीद और किसी ऐसे फर्क़ महसूल के अदा करने का मुस्तौजिब हो जिसका दफा तहती (२) में ज़िकर है उस महसूल मज़ीद या फर्क़ महसूल की दफाआत तहती मज़कूर में से किसी एक दफा तहती की रू से जैसी सूरत हो मुतालबा होने पर अदा करने में कसूर या अदा करने से इनकार करे तो जो रुपया कि उससे वाजिबुलअदा होगा वह किसी ऐसे मुलाज़िम रेलवे के किसी मजिस्ट्रेट के पास दरख़ास्त करने से जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ से उस काम के लिये मुकर्रर हो मजिस्ट्रेट के ज़रिये ले बतौर ऐसे जूरमाने के मुसाफिर से वसूल किया जाएगा जो मजिस्ट्रेट मौसूफ़ की तरफ से उस मुसाफिर पर आयद किये जाने की तक़दीर में वसूल किया जाता और जबकि वह जूरमाना वसूल होजाय तो मुन्तज़िम रेलवे को दे दिया जायगा ॥

वापिसी टिकट के किसी निसफ़ को मुन्तकिल करना

दफा ११४-अगर कोई शख्श किसी वापिसी टिकट के किसी निसफ को बेचे या बेचने का कस्द करे या किसी शख़स को देदे या देदेने का कस्द करे इस गरज से कि वह शख़स बज़रिया उसके सफर करसके या वापसी टिकट का वैसा निस्फ खरीद करे तो उसको ऐसे जूरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद पचास रु० तक होसक्ती है और अगर वापसी टिकट के वैसे निसफ खरीदार उस को लेकर सफर

करे या सफर करने का कस्द करे तो उसको जुरमाना मज़ीद की सज़ा दी जायेगी जिसकी हद उस सफर की बाबत जिसका उस टिकट की रू से अख्तियार है इकैहरे महसूल के मुवाफ़िक़ तक होसक्ती है॥

किसी गाड़ी या और मुकाम में दाखिल होनाजो ज़नानों के लिये मखसूस हो

दफा ११९-अगर कोई मर्द किसी गाड़ी या कमरे या कोठरी या और मुकाम में जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ से खास ज़नानों के इस्तेमाल के लिये रखा जाए जान बूझकर बिदून उज़र जायज़ के दाखिल हो या बाद दाखिल होने के किसी मुलाज़िम रेलवे के यह कहने पर कि उसको वहां से निकल आना चाहिये वहां ठहरा रहे तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद एक सौ रुपये तक होसक्ती है अलावा सोख्त होने किसी महसूल के जो उसने अदा किया हो और जब्ती किसी पास या टिकट के जो उसने हासिल या खरीद किया हो और वह बजरिये किसी मुलाज़िम रेलवे के उस रेलवे से निकाल दिया जा सकेगा॥

रेलवे पर नशे में होना या किसी अमर बाईस से तकलीफ का मुरतकिब होना

दफा१२०-अगर कोई शख्स रेलवे गाड़ी में या रेलवे के किसी जुज़व पर-
(अलिफ)नशे की हालतमें हो या(बे) किसी अमर बाईस से तकलीफ या किसी बेहयाई के फेल का मुर्तकिब हो या फोहश अलफ़ाज इस्तेमाल करे या बद ज़ुबानी करे या(जीम) अमदन या बिदून उजरे जायज के किसी मुसाफिर की राहत में खलल अन्दाज हो या कोई चिरागबुझादेता उसको ऐसे जुरमानेकी सजा होगी जिसकीहद पचास रुपये तक होसकती है अलावा सोख्त होने किसी महसूल के जो उसने अदा किया हो और जब्ती किसी पास या टिकट के जो उसने हासिल

या खरीद किया हो और वह बज़रिया किसी मुलाज़िम रेलवे के रेलवे से निकाल दिया जा सकेगा ॥

ज़मीमा दूसरा।

आम कवायद।

किसी मुसाफ़िर का एक गाड़ी से उस से आला दरजेकी गाड़ी तबदील करना

दफा ४—अगर कोई मुसाफ़िर किसी अदना दरजे की गाड़ी से उस से आला दरजे की गाड़ी हर दो दरजे की गाड़ियों के किराये का ज़रे फ़र्क़ अदा करके तबदील करना चाहे तो उस ट्रेन के गार्ड या किसी और ऐसे रेलवे मुलाज़िम को जिसको रेलवे मुन्तज़िम इस ग़रज़ के लिये मुक़र्रर करे ऐसे तबादले का ज़रूरी इन्तिज़ाम करना चाहिये ॥

जनाने मुसाफ़िर

दफा ५—जब कोई जनाने मुसाफ़िर तनहा सफ़र कर रहे हों तो उस ट्रेन के गार्ड को लाज़िम होगा कि उनके आराम का हर तरह ख्याल रखे और उन को गाड़ी में सवार करते वक़्त अगर ऐसे मुसाफ़िर उन से दरख़ास्त करें तो इस अमर की कोशिश करें कि उन मुसाफ़िरों को उन के टिकट के दरजे के मुताबिक ऐसी गाड़ी में सवार करें जिस में और जनाने मुसाफिर सफ़र कर रहे हों ॥

मुतअद्दी या छूत वाली बीमारियां

दफा ७—हस्ब ऐक्ट ६ सन् १८६०ई० मुफस्सला ज़ैल बीमारियां मुतअद्दी या छूत वाली शुमार की जाती हैं:—

(१) बियुबानिक फीवर (२) हैज़ा (३) डिफथेरिया (४) कोढ़ (५) खसरा (६) सकार लट फीवर (७) चेचक (८) टाइफस फीवर (६) टाइफाईड फीवर और (१०) काली खांसी ॥

शरायत जिन पर मुतअद्दी या छूत वाली बीमारियों के मरीज़ मुसाफिर रेल में ले जाए जाते हैं

दफा ८—कोई मुतअद्दी या छूतवाली बीमारीका मरीज़ मुसाफ़िर रेल में नहीं लेजाया जायगा जब तक (अलिफ़) वह अपनेवास्ते और अपनेहमराइयों के वास्ते गाड़ी में एक कमरा मखसूस न कराले (ब) इण्डियन रेलवे एक्ट ६ सन् १८६० ई० के ज़ेर दफ़ा ७१ (देखो ज़मीमा पहिला) उस बीमार मुसाफ़िर और उसके हमराहियों को जब तक वह रेल पर रहें दूसरे सफ़र करनेवाले या सफ़र करते हुये मुसाफिरों से अलैहदा रखने का तमाम ज़रूरी इन्तिज़ाम न कर लिया जावे और (जीम) दीगर ज़रूरी एहतियात जो रेलवे मुलाज़िम जिसने ऐसे मरीज़ को रेल में सफ़र करने की इजाज़त दी हो दूसरे सफ़र करने वाले सफ़र करते हुये मुसाफ़िरों को छूतवाली मरज लगजाने से रोकने के लिये ज़रूरी ख्याल करे न करली जावें॥

असनाए सफ़र में रस्ते में ठहरना

तमाम हिन्दुस्तान की रेलों पर मुसाफिरों को ख्वाह उन के पास लोकल टिकट हों या दूर दराज़ के सौ मील का सफ़र करने के बाद एक दिन ठहरने की इजाज़त है बशरते कि वह अपने टिकटों पर उस स्टेशन के स्टेशन मास्टर से जहां वह ठहरना चाहें लिखा लें॥

रेलवे मुलाजिमों का मुसफिरों के साथबदअखलाकी

अगर कोई रेलवे का मुलाज़िम किसी मुसाफ़िर के साथ बदसलूकी बद अखलाक़ी या बेतवजह से पेश आवे तो उसी वक्त वहां के रेलवे हुक्काम को या उस जिले के डिस्ट्रिक ट्रेफिक सुपरिण्टेण्डेण्ट को उस रेलवे मुलाज़िम की रिपोर्ट करनी चाहिये॥

रेलवे मुलाज़िमों को इनाम

रेलवे मुलाज़िमों के लिये मुसाफ़िरों से इनाम मांगने या लेने की सख्त मुमानियत है॥

ज़मीमा तीसरा।

अवध रोहेलखंड रेलवे।

नीचे लिखे हुए मुकामों में टिकटघर सब दरजे के टिकटों के बेचने के लिये रात दिन खुले रहते हैं॥

(१) अयोध्या (२) बाराबंकी (३) बरेली (४) बनारस (५) परतापगढ़ (६) चन्दौसी (७) देहरादून (८) राजघाट (९) शाहजहानपुर (१०) फैज़ाबाद (११) काशीजी (१२) कानपुर (१३) लखनऊ (१४) लकसर (१५) मुरादाबाद (१६) हरिद्वार॥

(१) उन्नाबो (२) आंवला (३) कानपुर बिरिज (४) तिलेहर (५) जौनपुर (६) दिबई (७) धामपुर (८) रामपुर (९) रायबरेली (१०) रुदौली (११) रुड़की (१२) सुलतानपुर (१३) संदीला (१४) शाहगंज (१५) गुशाईगंज (१६) नजीबाबाद (१७) नगीना और (१८) हरदोई में सारा दिन खुले रहते हैं और बाकी सब स्टेशनों पर गाड़ी के आने से एक घण्टा पहिले खोले जाते हैं॥

आसाम बंगाल रेलवे।

(१) चिट्टागांग (२) छावनी सिलचार और (३) गौहटी के स्टेशनों पर टिकट घर तीसरे दरजे के टिकटों की फ़रोख़्त के वास्ते हर एक गाड़ी के मुक़र्ररा वक़्त रवानगी से तीन घण्टे पेश्तर खोल दिये जाते हैं और॥

(१) अखौड़ा (२) बदरपुर (३) श्रीमगल (४) शाइस्तागंज (५) फेनी (६) करीमगंज (७) लकसम जंकशन और (८) नोयाखाली जंकशन पर दो घण्टे (९) कोमिल्ला पर डेढ़ घण्टा और बाक़ीमांदा स्टेशनों पर एक घण्टा पहिले टिकट घर खोले जाते हैं बड़े स्टेशनों पर टिकट घर गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले और छोटे स्टेशनों पर जहां गाड़ी आती हुई दिखाई देने लगती है बन्द कर दिये जाते हैं॥

ईस्ट इण्डियन रेलवे ।

(१) अलीगढ़ (२) आरा (३) असनसोल (४) अलाहाबाद (५) इटावा (६) बांकीपुर (७) बरदवान (८) वैद्यानाथ (९) पटना (१०) टुंडला (११) जबलपुर (१२) चन्दरनगर (१३) देहली (१४) दीनाजपुर (१५) सिरामपुर (१६) कानपुर (१७) कलकत्ता (१८) गया (१९) मिर्ज़ापुर (२०) मुग़लसराय (२१) मुक़ामे (२२) मेमारी (२३) हौड़ा स्टेशनों के टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं असबाब की बिलटी बन सकती है ॥

कलकत्ता शहर के अन्दर भी टिकट घर खोल दिये गये हैं जो ९ बजे सवेरे से शाम के ६ बजे तक खुले रहते हैं। यह टिकट घर (१) फेरली पलेस (२) नं० १८—३ चौरन्धी (३) आर्मी नेवी स्टोर्स (४) बड़ा बाज़ार नं० १२२ हैरीसन रोड में है ॥

ईस्टरन बंगाल स्टेट रेलवे ।

जो स्टेशन नीचे लिखे हैं उन पर टिकट घर सारा दिन और रात खुले रहते हैं इनके सिवाय और स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से आधा घण्टा पहिले खोले जाते हैं और गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले बन्द कर दिये जाते हैं ॥

(१) बारकपुर (२) बालीगंज (३) बगुला (४) बोगरा (५) बेलिया घाटा (६) पारबतीपुर (७) पुर्नियां (८) पोराधा (९) जलपाई गुरी (१०) दम दम जंकशन (११) दीनाजपुर (१२) ढाका (१३) रंगपुर (१४) सिलीगुरी (१५) संताहार (१६) काठीहार (१७) कुस्टिया (१८) कलकत्ता (१९) मैमनसिंह (२०) नटोर (२१) नारायणगंज और (२२) नैहटी ॥

ग्रेट इण्डियन पैनिनशुला रेलवे ।

(१) अहमदनगर (२) अकोला (३) अमरावती

(४) इतारसी (५) बाईकुला (६) भांदूप (७) भूसावल (८) भूपाल (६) परेल (१०) पूना (११) थाना (१२) झांसी (१३) चिंचपूकली (१४) दादर (१५) दोमबिवली (१६) देवा (१७) सेवत (१८) शोलापुर (१६) करीरोड (२०) कल्यान (२१) कुरला (२२) खांडवा (२३) गुलबरगा (२४) घाट कुपार (२५) मतंगा (२६) मुजगांओं (२७) मसजिद (२८) मुम्बारा (२६) नासिक (३०) नागपुर (३१) बारधा (३२) विक्टोरिया टरमिनस (३३) होशंगा आबाद स्टेशनों पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं और बाक़ी स्टेशनों पर दिन में हरवक्त और रात को मुसाफ़िर गाड़ी के चलने से दो घण्टे पहिले टिकट मिलते हैं॥

नार्थ वैस्टर्न रेलवे।

नीचे लिखे हुए स्टेशनों पर मुसाफ़िर हर वक्त टिकट ख़रीद सकें और असबाब की बिलटी करा सकें हैं॥

(१) अमृतसर (२) अम्बाला छावनी (३) अम्बाला शहर (४) बादामी बाग़ (५) बटाला (६) बठिंडा (७) पठानकोट (८) पटियाला (६) फिल्लौर (१०) पेशावर छावनी (११) पेशावर शहर (१२) जालन्धर छावनी (१३) जालन्धर शहर (१४) जगाधरी (१५) जम्बू (तवी) (१६) जेहलम (१७) जेकब-आबाद (१८) हसनअबदाल (१६) हैदराबाद सिंध (२०) खैरपुर मीर (२१) दारिया खां (२२) दिल्ली (२३) रावलपिण्डी (२४) रोड़ी (२५) सांगला हिल (२६) सिबी (२७) सहारनपुर (२८) सक्खर (२६) सियालकोट (३०) शिकारपुर (३१) फ़ीरोज़पुर छावनी (३२) फ़ीरोज़पुर शहर (३३) करांची छावनी (३४) कराची शहर (३५) कोटरी (३६) कोटा (३७) केम्बलपुर छावनी (३८) गुजरात (३६) गुजरावाला (४०) गुजजरखां

(४१) गुर्दासपुर (४२) लाहौर (४३) लाहौर छावनी पूर्वी (४४) लाहौर छावनी पश्चिमी (४५) लायलपूर (४६) लुध्याना (४७) मुलतान छावनी (४८) मुलतान शहर (४९) मंटगुमरी (५०) मेरठ शहर (५१) मेरठ छावनी (५२) नौशहरा ॥

निजाम रेलवे

(१) औरंग आबाद (२) जलना (३) दौलत आबाद (४) काज़ीपत (५) नदेद (६) निज़ाम आबाद (७) बारंगल (८) यलंदू इन स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से एक घंटा और बाक़ी स्टेशनों पर आधा घण्टा पहिले टिकट घर खोले जाते हैं ॥

१ बेगमपत (२) बेजवादा (३) हैदराबाद (४) सिकन्दाबाद स्टेशनों पर टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं ॥

बर्मा रेलवे ।

(१) इनसैन (२) पजोनडांग (३) पगोडा रोड (४) थामियांग (५) जीम खाना (६) छावनी (७) रंगून (८) कमायत (९) केमन दैन (१०) लम्माडा (११) मांडले (१२) मिशनरोड स्टेशनों पर टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं ॥

(१) पेगु (२) पनमाना (३) प्रोम (४) थाजी (५) टौंगू (६) सगैंग (७) शाजू (८) काटा (९) लेपटडन (१०) मेंगयान (११) मेमयो (१२) यमेंथन स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से एक घण्टा पहिले खोले जाते हैं ॥

बी० बी० ऐंड सी० आई रेलवे ।

नीचे लिखे हुए स्टेशनों पर टिकट घर गाड़ी के आने से २ घण्टे पहिले खोले जाते हैं और गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले बंद कर दिये जाते हैं पर और लाइनो पर जाने वाले यहां और बम्बई के स्टेशनों पर अपने और नौकरों के वास्ते दिन म हरवक़्त टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी करा सक्ते हैं ॥

(१) आबूरोड (२) अजमेर (३) अहमदआबाद (४) आगरा फोर्ट (५) अलवर (६) इन्दौर (७) बांदी कुई (८) बठिंडा (९) बड़ोच (१०) बड़ोदा (११) पालमपुर (१२) जैपुर (१३) हिसार (१४) दिल्ली (१५) रतलाम (१६) रेवाड़ी (१७) सूर्त (१८) कासगंज (१९) कानपुर (२०) मथुरा छावनी (२१) मह्व (२२) नसीराआबाद (२३) नन्दरबार (२४) नीमच (२५) वधवान ॥

बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे ।

स्टेशनमास्टरों को हिदायत है कि मुसाफिरों के टिकट खरीदने और असबाब की बिल्टी कराने की सहूलियत के वास्ते गाड़ीके आने से एक घण्टा पहिले टिकट घर खोल दें ॥

बंगाल नागपुर रेलवे ।

हौड़ा स्टेशन पर मुसाफिर दिन में किसी वक्त टिकट खरीदसक्ते हैं । और कलकत्ता और नागपुर शहर में भी टिकट घर खोले हुए हैं जो नीचे लिखे जाते हैं ॥

(१) नं० ६ ओलड कोर्ट हाऊस कलकत्ता टामस कुक एंड सनज की कोठी में (२) नं० ४१ चौरंगीरोड आर्मी एंड नेवी स्टोस कलकत्ता यहां पहले और दूसरे दरजे के टिकट मिलते हैं (३) नं० ३०—१डिल हौजी सुकेयर कलकत्ता ६॥ बजे से ५॥ बजे तक खुला रहता है (४) नं० ४२ सटरेंडरोड कलकत्ता हौडे के पुल के पास ६ बजे सवेरे से १० बजे रात तक खुला रहता है और (५) नागपुर शहर का टिकट घर ॥

मदरास रेलवे ।

(१) अदोनी (२) अरकोनाम (३) वाओरंगपेट (४) बंगलोर (५) जालार पेट (६) रायापुर्म (७) रायचूर (८) सलेम (९) कटपडी (१०) कड्डापा (११) कोहनूर (१२) कोयम्बटूर (१३) मदरास (१४) मेत पूलेयम इन स्टेशनों के मुसाफिर जो मदरास रेलवे पर डाक गाड़ी में सफर करना चाहें दिन में हर वक्त मुकर्र टिकट घरों से टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी करा सक्ते हैं ॥

स्दर्न मरहटा रेलवे ।

(१) बिलारी (२) बेंगलोर (३) बेलगराम (४) धारवार (५) गुंटा-कुल (६) मीरज (७) मैसूर (८) बालटेयर और (६) हुबली स्टेशनों पर मुसाफिर दिन में हर वक्त अपने और अपने नौकरों के लिये टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी भी करा सक्ते हैं ॥

साउथ इण्डियन रेलवे ।

नीचे लिखे हुये स्टेशनों पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं ताकि मुसाफिरों को टिकट खरीदने और बिलटी कराने में आराम रहे ॥

(१) अरकोनाम जंकशन (२) अम्मनया यकनूर (३) इरादे जंक-शन (४) त्रिचनापली जंकशन (५) त्रिचनापली फोर्ट (६) त्रिवलोर (७) तंजोर जंकशन (८) तिन्नीवेली पूल (६) टूटी कारन (१०) चिंग-लीपत (११) दिंदीगुल (१२) कांजीवर्म (१३) कडालोर नया (१४) कडालोर पुराना (१५) करोर (१६) करईकल (१७) कम्बाकोनाम (१८) मायावर्म (१६) मद्रास (एगमोर) (२०) मदूरा जंकशन (२१) मृतूपत (२२) नेगापटम (२३) वेलू पुर्म (२४) वेलोर ॥

बाकी स्टेशनों पर जहां मेले तेहवार होते हैं यात्रियोंकी वापिसी पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं ॥

इति ॥

पुस्तक मिलने का पताः—

रेलवे के बड़े २ स्टेशनों के बुक स्टालों से मिल सक्ती है ॥